चन्दामामा
अक्तूबर १९६७

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS-26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

# चन्दामामा

अक्टूबर १९६७

दिलीप और उसके साथी
पिकनिक के लिये एक टापू पर गए
अरे, इतनी देर हो गई...इसका मुझे ख्याल ही न रहा। चलो, हमलोग अब सामान बाँध लें और लौट चलें।
सर, सर...नाँव का पता ही नहीं।
नाँव रस्सी से फिसलकर बह गई होगी। खैर, उठते हुए ज्वार से लगता है वह ज्यादा दूर नहीं गई।
यहाँ तो अब अंधेरा हो गया...और हवा भी बहुत तेज चल रही है...दियासलाई से काम नहीं चल सकता।
घबराओ मत। मेरे पास 'एवरेडी' टॉर्च है—इसके ज़रिये हमलोग जल्दी ही नाँव ढूँढ निकालेंगे।
आह, वह रही! जल्दी करो, कहीं और न दूर चली जाए। दिलीप, अपनी टॉर्च से नाँव पर रोशनी फेंको और मैं तैरकर उस तक पहुँचने की कोशिश करता हूँ।
मास्टर साहब नाँव के करीब पहुँच रहे हैं। वाह-वाह! वे नाँव पर चढ़ रहे हैं और अब घबराने की कोई बात नहीं!
जी हाँ, मास्टर साहब और 'एवरेडी' टॉर्च ने कमाल किया!

शक्ति और उत्साह के लिये!
दूध
कोको
शक्कर
माल्ट
Cadbury's
Bournvita
THE IDEAL FOOD DRINK FOR STRENGTH AND VIGOUR
कॅडबरिज़
बोर्नविटा
बोर्नविटा में कई पौष्टिक पदार्थ सम्मिश्रित हैं। इससे मांसपेशियों और स्नायु-तन्तुओं के विकास के लिये प्रोटीन मिलता है, शक्ति और उत्साह के लिये कार्बोहाईड्रेट, हड्डियों को मज़बूत रखने के लिये खनिजलवण और स्वास्थ्य के लिये आवश्यक विटामिन मिलते हैं। आसानी से बनाया जा सकने वाला बोर्नविटा स्वादिष्ट भी होता है।

यह इंजीनियर बनना चाहता है। क्या आप इसकी आकांक्षा पूरी करेंगे ? अवश्य ! पंजाब नेशनल बैंक में सेविंग्स खाता खोल कर आप जरूर पूरी कर सकेंगे।

आज ही खाता खोलकर इसके लिए बचत करना शुरू करें। इसके अलावा रिकरिंग डिपॉजिट स्कीम की हमारी आकर्षक शर्तों की भी जानकारी हासिल करें।

**पंजाब नेशनल बैंक**

# मीठी मीठी बातें
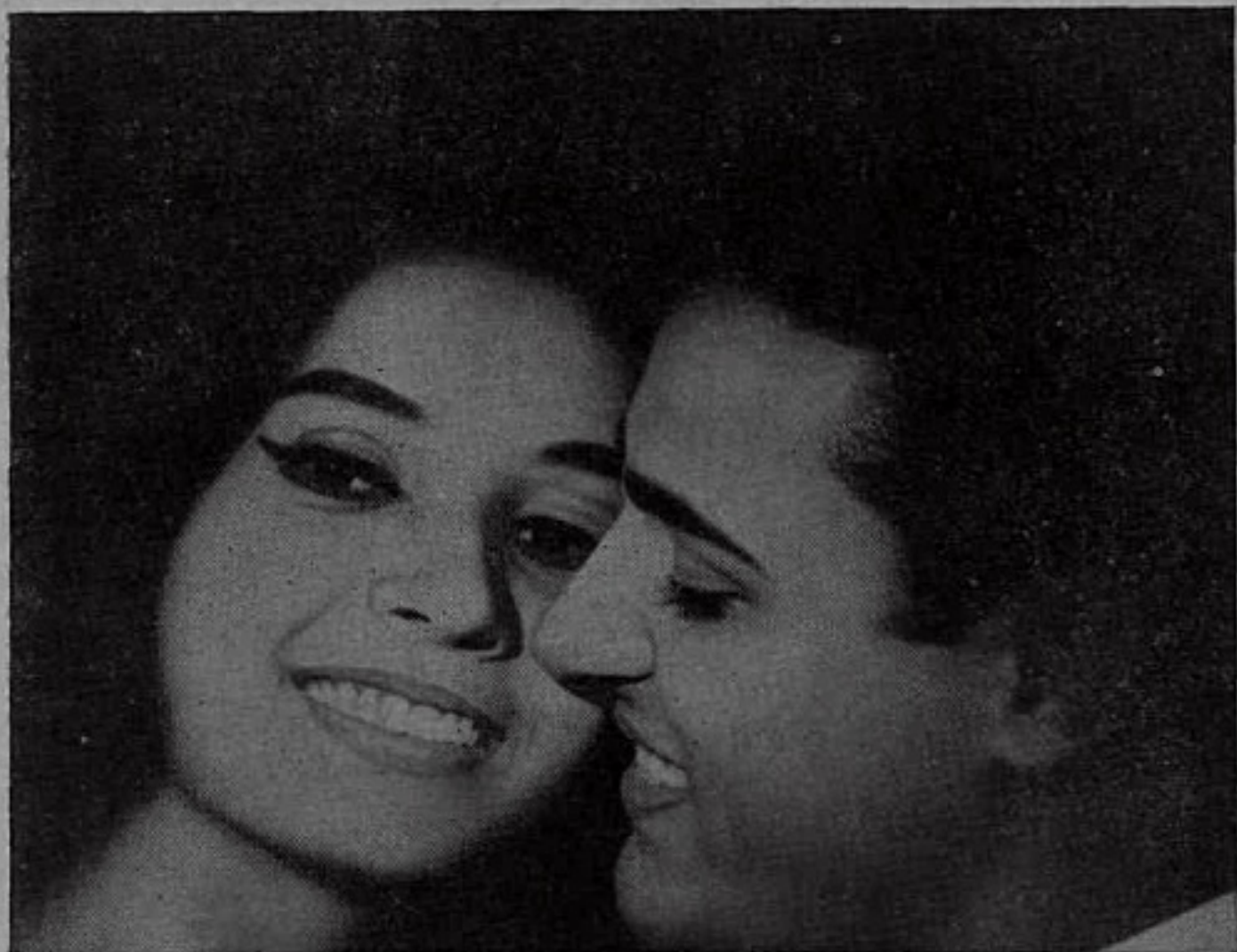
मीठी मीठी बातें—
प्यार भरी सरगोशियाँ—
बिनाका ग्रीन की दुर्गन्धनाशक
"क्लोरोफिल" आपकी बातों में मिठास
और साँसों में सुगंध भर देगी

CIBA

चन्दामामा
संचालक: चक्रपाणी
हम इस अंक में एक कहानी– "प्रत्युपकार" दे रहे हैं। इससे हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि बल न संख्या में है, न समूह में ही, न साधन शक्ति में ही।
बल है एकता में, संगठन में... अगर ये दोनों हों तो और बातें स्वतः आ जाती हैं। और इस एकता की आज हमें पहिले से कहीं अधिक आवश्यकता है।
वर्ष: १९ अक्तूबर १९६७ अंक: २
CHITRA

२२ जून १७५७ में क्लाईव अपनी सेना के साथ, गंगा के किनारे पलासी के पास एक अमराई में पहुँचा।

नवाब की सेनाओं ने धोखा दिया। उन्होंने हुगली, कातवा के पास क्लाईव की सेनाओं का सामना नहीं किया। नवाब की सेना पहिले ही पलासी के पास छावनी डाले हुए थी।

२२ जून को सवेरे दोनों पक्ष की सेनाओं में युद्ध प्रारम्भ हुआ। मीर जाफर और राय दुर्लभ, जिनके पास बड़ी बड़ी सेनायें थीं, युद्ध में नहीं आये।

एक फ्रेन्च कर्मचारी की मदद लेकर, मोहनलाल और मीर मदन आदि कुछ सेना लेकर आये।

इन सेनाओं के साथ थोड़ी देर लड़कर, क्लाईव पेड़ों की झुरमुट में चला गया। अगर मीर जाफ़र धोखा न देता और अपनी सेना को युद्ध के लिए लाता, तो अंग्रेजों की बुरी तरह हार होती।

क्लाईव ने अपने सेना के अधिकारियों से सलाह मशवरा किया, दिन भर नवाब की सेना पर, गोलीवारी करके, आधी रात के समय छावनी को मिट्टी में मिलाने का निश्चय किया।

परन्तु गलती से, एक गोला मीर मदन पर फूटा और वह मर गया। नवाब डर गया और उसने मीर जाफ़र से सलाह माँगी। उस दगेबाज ने सलाह दी कि सैनिकों को मैदान से वापिस कर लिया जाय।

नवाब से जब हुक्म आया, तब मोहनलाल अंग्रेजों पर खूब तेज़ी से गोलाबारी कर रहा था। उसके सैनिक भी अच्छे मोर्चों पर से उनसे खूब युद्ध कर रहे थे।

"युद्ध विराम का क्या यह समय है, जब जय और पराजय का फैसला हो रहा है।" मोहनलाल ने नवाब को कहला भेजा।

नवाब ने मीर जाफ़र की ओर देखा, मीर जाफ़र ने गम्भीर होकर कहा—"जो मुझे मुनासिब लगा, वह मैंने कहा है। आगे हुज़ूर की मर्जी। मैं कुछ और नहीं कह सकता।"

मीर जाफ़र का रुख देख पहिले ही नवाब डर गया था, अब तो और भी घबरा गया, सेना को वापिस लाने के लिए उसने मोहनलाल को खबर पर खबर भेजी, आखिर कई आदमियों के कहला भेजने पर, उसे अपनी सेना वापिस बुलानी पड़ी। उसके सामने और कोई रास्ता न था।

मोहनलाल के सैनिक जब वापिस आ रहे थे, तो उन्होंने दगेबाज सैनिक टुकड़ियों

को मैदान छोड़कर भागते देखा। उनको भागता देख, वे भी भाग निकले। आखिर सैनिकों का भागना इतना बढ़ गया कि जल्दी ही सारी छावनी खाली हो गई। और हाय तोबा मच गई।

सामने अंग्रेज सैनिक थे और वह दगेबाज सलाहकारों से घिरा हुआ था। सिरोजुद्दौला यह देख घबरा-सा गया। उसे कुछ सूझा नहीं। वह भी भागने लगा। वह रात भर सफर करता रहा। अगले दिन आठ बजे वह मुर्शिदाबाद अपने राजमहल में पहुँचा।

हार की खबरों के कारण मुर्शिदाबाद में खलबली मची हुई थी।

सिरोजुद्दौला ने फिर अपनी सेना जमा करने की कोशिश की। उसने कहा कि जो कोई उसका साथ देगा, उसे ढेर-सा रुपया देगा। पर लोग उसे देखते ही भाग निकले।

जब और कोई रास्ता न रहा, तो वह अपनी बेगम लुत्फुन्नबानू के साथ शहर छोड़कर कहीं चला गया।

नवाब के आने के अगले दिन २३ जून को मीर जाफ़र मुर्शिदाबाद आया।

थोड़े दिनों बाद क्लाईव भी वहाँ आया। मीर जाफ़र को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया गया।

कुछ दिनों बाद सिराजुद्दौला पकड़ा गया और मुर्शिदाबाद लाया गया।

तुरत मीर जाफ़र के लड़के मीरन ने सिरोजुद्दौला की हत्या का हुक्म दिया। इस तरह नवाब के खिलाफ़ मीर जाफ़र की साजिश कामयाब हो गई।

क्लाईव और उसके साथियों को बहुत से ईनाम मिले २४ परगणा की ज़मीन्दारी मिली। अंग्रेजों की कम्पनी को बहुत-सा रुपया भी मिला।

सच कहा जाये तो पलासी का युद्ध कोई बड़ा युद्ध न था। परन्तु कितने ही महायुद्धों की अपेक्षा इसके अधिक परिणाम हुए।

यह कहना कि इस युद्ध में क्लाईव ने बड़ी युद्ध निपुणता दिखाई, गलत है। सिरोजुद्दौला और मीर जाफ़र सभी ने अपना स्वार्थ ही देखा।

# प्रत्युपकार

हिमालय में एक नदी के दक्षिण में एक छोटा देश है। उस देश का राजा अपने महल में था तो एक द्वारपालक ने आकर बताया—"महाप्रभू, चूहों राजा आकर आप के दर्शन करना चाहते हैं।"

राजा को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि चूहों का भी कोई राजा होता है और वह बोल सकता है। उसने द्वारपालक से उसे "अन्दर" भेजने के लिए कहा।

एक चूहा राजा की तरह चलता अन्दर गया। उसके पीछे कुछ चूहे सैनिक भी थे। राजा ने सादर उनका स्वागत किया और पूछा कि वे किस काम पर आये थे। "राजा इस वर्ष फसल नहीं हुई है, इसलिए मेरी प्रजा को बड़ी कठिनाई हो रही है। अगर आपने धान हमें उधार न दिया तो हम भूख के मारे मर जायेंगे।" चूहों के राजा ने कहा।

"धान दूँगा पर तुम्हें कितना धान चाहिए?" राजा ने पूछा।

"एक बड़ी कोठरी भर दीजिये, अगली फसल में आपका उधार मय सूद के दे देंगे।" चूहों के राजा ने कहा।

"कोठरी भर धान? पर वह सब कैसे ले जाओगे?" राजा ने चकित होकर पूछा।

"वह सब हम पर छोड़ दीजिए।" चूहों के राजा ने कहा।

राजा ने आज्ञा दी कि धान की एक बड़ी कोठरी उन के लिए खोल दी जाये। उस दिन रात को कुछ लाख चूहे आये और बिना एक दाना छोड़े, सारा धान

उठाकर ले गये। अगले दिन जब राजा ने जाकर देखा तो कोठरी खाली थी।

फिर फसल के आने के बाद, चूहों ने मय सूद के उधार लिया धान राजा की कोठरी में पहुँचा दिया।

"इन चूहों में बुद्धि ही नहीं नीयत भी है।" राजा ने अपने दरबारियों से कहा।

कुछ समय बीता, नदी के उत्तर के राज्य के राजा ने इस राजा पर आक्रमण करने की ठानी और नदी के पास आकर पड़ाव डाला।
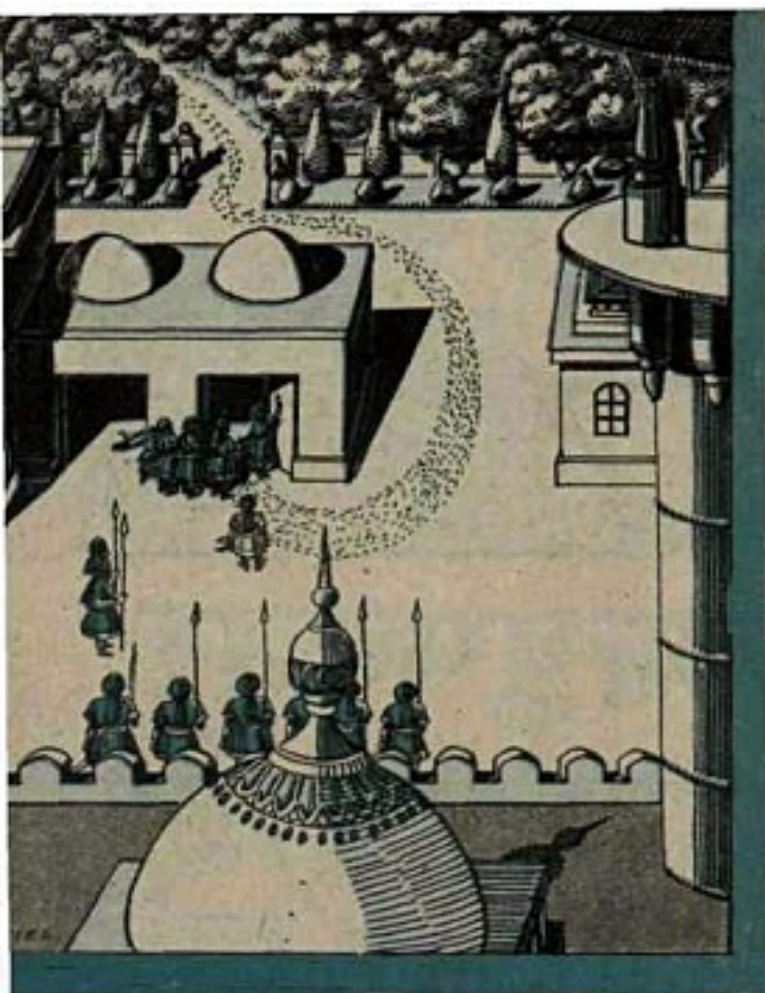
शत्रु राजा बड़ा बलवान था। राजा अपने महल में दुखी हो, बैठा बैठा सोच रहा था कि अवश्य उसकी हार होगी, कि तब चूहों का राजा आया।

उसने कहा—"मैं यह जानने आया हूँ कि, मैं ऐसे मौके पर आपकी क्या कुछ मदद कर सकता हूँ। जब मैं पहिले आपके दर्शन के लिए आया था तो आपने हमारी बड़ी सहायता की थी। इसलिए यदि हम आपकी कोई सहायता कर सकें तो बताइये हम वह खुशी खुशी करेंगे।"

राजा दुखी था पर यह सुनकर वह मुस्करा पड़ा। चूहा है तो छोटा, पर इसकी बातें बड़ी हैं, उसने सोचा।

"मैं आपकी सद्भावना के लिए बहुत कृतज्ञ हूँ पर मेरी इस परिस्थिति में चूहे कैसे मदद कर सकते हैं? शत्रु बलवान है। उसकी सेना मेरी सेना से बड़ी है और वह सेना समीप ही नदी के उस पार धरना दिये हुये हैं। उनको जीतना अलग, हम उनको नदी पार करने से भी नहीं रोक सकते हैं।" राजा ने कहा।

"पहिले भी आपने हमारी शक्ति पर शंका की थी। परन्तु हम धान ले गये और वापिस भी ले आये और इस तरह हमने आपकी शंका दूर कर दी। हम पर आप भरोसा कीजिये। आप थोड़ी-सी मदद हमारी कीजिये। आज रात आप अन्धेरा होने से पहिले एक लाख लकड़ियाँ, नदी के किनारे पानी के पास रखवा दीजिये।" चूहों के राजा ने कहा।

चूहे, सहायता करें, या न करें, पर जो मदद चूहों के राजा ने माँगी थी, क्योंकि वह असम्भव न थी, राजा ने अपने सैनिकों द्वारा, लाख लकड़ियाँ नदी के किनारे रखवादीं।

उस दिन रात को कुछ लाख चूहे नदी के तट पर आये। उन्होंने एक एक लकड़ी पानी में घसीटी और उस पर तीन तीन चार चूहे सवार होकर उनको तमेड़ बनाकर और अपनी पूछों को चप्पू बनाकर, आधी रात के समय वे नदी पार चल गये।

शत्रु सैनिक गाढ़ निद्रा में थे। इतने सारे चूहों ने जाकर उनके धनुषों के तागे काट दिये। उनके कपड़े काट दिये। थैलों में छेद कर दिये। उनकी रसद चट कर गये। दो घंटों में शत्रु सेना भिखारी बन गई। काम खतम होते ही चूहे फिर उन्हीं लकड़ियों पर सवार होकर नदी के इस पार चले आये और अपने अपने घर चले गये।

अगले दिन सवेरे जब शत्रु सेना सोकर उठी, तो देखा कि उनके हथियार खराब कर दिये गये थे। रसद खाली हो गई थी। कपड़े, चादर, दुशाले, सब काट दिये गये थे। सारी छावनी में गड़बड़ी मच गई।

शत्रु सेना में जब यूँ हाहाकार मची हुई थी, तो चूहों के राजा के दूत ने आकर राजा के पास कहा—"महाराज, अपने शत्रु पर आक्रमण करने का यही अच्छा समय है।"

राजा के पताका फहराते अपनी सेना के साथ नदी के तट पर आता देख, शत्रु सेना "बाप रे बाप...." चिल्लाती छावनी से भाग निकली।

फिर इस राजा ने शत्रु राजा के पास यूँ खबर भेजी—"इस बार मैंने अपने राज्य के चूहों को ही भेजा है। फिर कभी हम पर आक्रमण हुआ, तो हम अपनी गौव्वें, बकरियाँ, कुत्ते और बिल्लियों को भेजेंगे। अगर तब भी आपकी अक्ल ठीकाने न आई तो हम अपने राज्य के शेर, अजगर आदि भेजेंगे। अगर वे भी नकाफी रहे तो मैं अपनी सेना के साथ आकर आपका सर्वनाश कर दूँगा।"

"जिसके चूहों ने ही इतना नुकसान किया था, उससे वैर रखना ठीक न था। यह सोच शत्रु राजा ने आक्रमण ही बात ही पूरी तरह भुला दी।

चूँकि चूहों ने इस प्रकार राजा की सहायता की थी इसलिए चूहों की राजा की इच्छा पर राजा ने दो व्यवस्थायें कीं। एक यह थी कि राज्य में कहीं भी बिल्ली न रहे और दूसरी यह कि जब नदी में बाढ़ आये तो चूहों के घर ताकि पानी में न डूबें उसने नदी के तट पर बन्ध बनवा दिये। ये दोनों व्यवस्थायें अब भी उस देश में सुरक्षित हैं।

# पाताल दुर्ग

[१७]

[कालशम्बर मान्त्रिक, धूमक और उसके साथियों को पहाड़ की चोटी पर ले गया। वहाँ उनको एक सरोवर के तट पर राजकुमारी कान्तिसेना दिखाई दी। कुम्भीर, जो उसकी रक्षा कर रहा था, जान गया कि मान्त्रिक उस प्रदेश में आया हुआ था। वह उसके पास तेज़ी से आने लगा। बाद में:—]

धूमक को ज्योंहि सन्देह हुआ कि कुम्भीर उनकी ओर आ रहा था, उसने त्योंहि तलवार निकाली और कहा— "महामान्त्रिक, कुम्भीर को हमारा रहस्य मालूम हो गया है, वह इस तरफ़ आ रहा है। राक्षसों को इसकी सूचना दिये बगैर ही उसको यम लोक पहुँचा देना ठीक है।"

मान्त्रिक ने हँसकर कहा—"धूमक, जल्दबाजी न करो। कुम्भीर हमारी तरफ़ का ही है। वह हमारे लिए वैसा ही है, जैसा कि विभीषण रावण के लिए था, वंश द्रोही हर किसी युग में होते हैं।

कुम्भीर पेड़ के पास आया। एक सूखे तने पर बैठ गया। "शम्बर! राक्षसों के बड़े कान होते हैं। उनकी श्रवण शक्ति

व्यर्थ सन्देह न करो। ये तुम्हें जानते हैं। कदम्ब राज्य की गुफाओं में जो तुमने राजकुमारी को वचन दिया था, वह भी ये जानते हैं।"

यह सुनते ही कुम्भीर ने अपना सिर मोड़ा और धूमक और सामक की ओर कहा—"ये जीते जी इतनी दूर आये हैं? यह काला गरुड़ पक्षी किस का है? यह मुख मैंने कहीं देखा है।"

"देखा ही होगा, यह जंगलियों का सरदार विरूप है।" कालशम्बर मान्त्रिक ने कहा। विरूप, धूमक और सोमक ने झुककर राक्षस को नमस्कार किया।

"यह क्या विनय है?" कुम्भीर ने आँखें मचकाई। "शम्बर! मैं अपने वंश के गौरव के संरक्षण के लिए मैंने तुम्हारी सहायता करने का वादा किया था। कहीं, तुम विश्वासघात तो नहीं करोगे?"

"यह सन्देह तुम्हें क्यों हो रहा है?" मान्त्रिक ने पूछा।

"मैं मानों हज़ार आँखों से सब कुछ देखता आ रहा हूँ। पर्वत के नीचे जल प्रपात में, पहाड़ के सरोवर में, जो तेरे साथी खेल खिलवाड़ कर रहे हैं, उन बड़ी होती है। कुछ दिनों से मुझे यह सन्देह हो रहा है कि तुम कहीं विश्वासघात तो न करोगे। मैं महाकलि का भाई नहीं हूँ, इसलिए मैं कैसे रावण हो सकता हूँ! और वंश की बात? हमारा राहु वंश है और उसका केतु। इसलिए वंश द्रोह की बात ही नहीं उठती।"

मान्त्रिक ने उसकी ओर दो कदम रखे, तने के पास खड़े होकर धीमे से कहा—"कुछ लोग नये आये हैं ताकि तुम पर उनको विश्वास हो सके, इसलिए मैं छोटे मोटे झूट बोल रहा हूँ। तुम

सब के बारे में जानता हूँ। वे क्या कर रहे हैं?"

"यह बड़ा रहस्य है, इसको अभी खोल देना अच्छा नहीं है। पर एक बात तुम्हें बताता हूँ। तुम पर और तुम्हारे वंश के तीस राक्षसों पर मैं कोई आपत्ति नहीं आने दूँगा। मैं इसका वचन देता हूँ।" कालशम्बर ने कहा।

कुम्भीर ने कुछ न कहा। पर उसने इस तरह सिर हिलाया, जैसे वह इन बातों से सन्तुष्ट न हो। तने के पास से वह सरोवर के तट के पास चला गया।

मान्त्रिक ने तने का छेद बन्द कर दिया। सिर नीचा करके वह पीछे इस तरह कुछ दूरी तक चला, जैसे बड़ी चिन्ता में हो। "भद्र! क्यों सब तैयारियाँ ठीक तरह हो रही हैं न? दो एक घंटों में अन्धेरा हो जायेगा। भस्मों को अपनी अपनी जगह रख देना। राक्षसों के कृपि जन्तुओं, यानि चीते, शेर और हाथियों की क्या बात है? वे आज से उपवास करेंगे न? कुम्भीर के आदमी उनको कल दुपहर तक रोककर क्या फिर उनको शिकार के लिए छोड़ सकेंगे?"

"सब ठीक हो रहा है। हर कोई अपनी अपनी जगह होशियार है। औषधी और भस्म आज रात को पाताल दुर्ग के आस पास के पेड़ों पर चढ़ने जा रही है। शेर और हाथी जो अच्छे हो गये थे, फिर क्रूर होने जा रहे हैं। केवल सरोवर की बात का ही आप ख्याल रखिये। वह बड़ा पत्थर, जिस जगह होना चाहिए था, उस जगह है कि नहीं, यह हम न जान सके। हम में जलस्तम्भन विद्या जाननेवाला कोई नहीं है न?" भद्र ने कहा।

"महामान्त्रिक! सुरंग की दीवारों से कहीं कहीं पानी आ रहा है। कहीं हमारे निवास पानी में डूब तो नहीं जायेंगे?"

मान्त्रिक कुछ देर तक स्तब्ध खड़ा रहा फिर झट जल्दी जल्दी सीढ़ियों से उतरकर सुरंग में बने निवास में गया। वहाँ उसे दीवारों पर पानी की धारायें दिखाई दीं।

मान्त्रिक ने एक छोटा पात्र मंगवाया, उसमें उस पानी को लिया और अपने अनुचरों में से एक को उसे पीने के लिए कहा।

"स्वाद कैसा है? खारा है? या मीठा है?" मान्त्रिक ने पूछा।

"मीठा है...." उसने कहा।

"मीठा....? मतलब जैसा कि हमारे जलप्रपात का है?" मान्त्रिक ने पूछा। अनुचर ने सिर हिलाकर कहा—"हाँ"

"हमें किसी प्रकार का भय नहीं है। पर देखते रहो कि पानी ज्यादह न आने लगे।" भद्र की ओर मुड़कर मान्त्रिक ने कहा—"भद्र, वे रस्सियाँ तैयार हैं न? मैं थोड़ी देर में सरोवर के पास जा

"इस पत्थर के बारे में फिक्र न करो, यह मैं पहिले ही कह चुका हूँ न? यदि उसके बारे में थोड़ी-सी भी गल्ती हुई, तो राक्षसों की मौत झूट समझो और हमारी सच। जरा अन्धेरा होने दो, मैं उसके बारे में जो कुछ करना है मैं कर दूँगा।" मात्रिक ने कहा।

इसके बाद पर्वत के "गर्भ" में वे अपने अपने निवास की ओर चल दिये।

वे सुरंग की सीढ़ियों पर से उतर रहे थे कि कुछ लोग सामने की ओर से मन्त्रिक के पास भागे भागे आये।

रहा हूँ। मैं अपने साथ धूमक, सोमक और विरूप को ले जाऊँगा। यहाँ की तैयारियों की जिम्मेवारी तुम पर है।

सूर्यास्त के बाद, अन्धेरा होने पर कालशम्बर, धूमक, सोमक और विरूप को साथ लेकर गुफ़ा में से पर्वत की चोटी पर गया। वहाँ एक पेड़ के नीचे, बेलों से बनी लम्बी रस्सी पड़ी थी, धूमक, सोमक और विरूप ने उसको अपने कन्धों पर डाल लिया।

उन्हें सब विचित्र-सा लग रहा था, भद्र और मान्त्रिक में जो बातचीत हुई थी, उसका एक शब्द भी वे न समझ सके थे। ये बूटियाँ, सरोवर, पत्थर, जलस्तम्भन सब उनको विचित्र-सा लग रहा था। पूछने पर कालशम्भर कह रहा था कि यह परम रहस्य था।

आकाश में तारे झिलमिलाने लगे थे। उनके प्रकाश में धीमे धीमे चलते चुपचाप पहाड़ के सरोवर के पास पहुँचे। वे जिस जगह पहुँचे थे, उसके एक ओर कुम्भीर राक्षस और राजकुमारी कान्तिसेना कुछ देर पहिले टहलकर गये थे। यह प्रदेश पाताल दुर्ग के पास था।

तट पर पहुँचते ही कालशम्बर मान्त्रिक ने पानी में मन्त्रदण्ड को आधा डुबोया। कुछ मन्त्र पढ़ते पढ़ते उसने चारों ओर देखा। तट पर बहुत-से वृक्ष थे। उनकी टहनियाँ, हवा के झोंके के साथ एक दूसरे से टकराती अजीब-सी ध्वनि कर रही थी।

मान्त्रिक ने मन्त्रदण्ड उठाकर उन पेड़ों को धूमक और सोमक को दिखाते हुए कहा—"बेल का एक सिरा उस पेड़ पर बाँध दो और दूसरा मेरे हाथ में दो। मैं सरोवर में घुसने जा रहा हूँ। कब

वापिस आऊँगा, कह नहीं सकता। पर तुम चुपचाप यहीं बैठे रहो।" कहकर उसने बेल का सिरा हाथ में लिया, "शाम्भवी" कहता पानी में कूद गया।

धूमक, सोमक, विरूप चुपचाप बैठे थे। एक घंटा हो गया। पेड़ों के झुरमुट में एक उल्लू जोर से चिल्लाया। विरूप के कन्धे पर जो गरुड़ तब तक चुपचाप बैठा था उल्लू का चिल्लाना सुनकर पंख फड़फड़ाता चिल्लाया। इतने में एक चमगादड़ ने उसके सिर पर चोट किया और पेड़ों में जा छुपा। गरुड़ चिढ़ा। विरूप के कन्धे पर से उतर आया, पैरों से ज़मीन को खरोंचा और फिर उड़ने की कोशिश की।

धूमक ने आगे बढ़कर उसके पैर से लटकती रस्सी पकड़ ली। "विरूप, इसको उड़ने न दो, यह हमारे काम आ सकता है।"

"इसे भागने न दूँ? यह मुझे छोड़कर कहाँ जायेगा?" कहकर विरूप ने गरुड़ पक्षी को दोनों हाथों से पकड़ लिया। "मान्त्रिक बहुत देर हो गई है, अभी तक पानी से नहीं निकले हैं।" उसने कहा।

"यही मैं देख रहा हूँ। भले ही कोई जलस्तम्भन विद्या जान जाये, पर पानी में कोई इतनी देर नहीं रह सकता। अगर उस पर कोई खतरा आया, तो हम सब राक्षसों के हाथ मार दिये जायेंगे।" धूमक ने हताश होकर कहा।

वे इस तरह बातें कर रहे थे कि पहाड़ के नीचे पाताल दुर्ग के पास उनको वाद्यों का शोर और राक्षसों के पटाकों की रोशनी दिखाई दी।

"लगता है, उन्होंने जलसा अभी से शुरु कर दिया है।" विरूप ने कहा।

"ऐसा ही लगता है कल दुपहर को ही तो वे शशिकान्त का शिरच्छेद करेंगे, उसे

CHITRA

और राजकुमारी कान्तिसेना को, मान्त्रिक कैसे इन दुष्टों के चुंगल से छुड़ा सकेगा, यह मुझे नहीं मालूम हो रहा है। हम जिस पहाड़ के "पेट" में हैं, वहाँ के सुरंगों का रास्ता जानकर वे ही हमें पहिले मार सकते हैं।" सोमक ने कहा।

"कुछ भी हो सकता है, अगर अभी मान्त्रिक का शव पानी के ऊपर तैर आये तो भी मुझे आश्चर्य न होगा।" धूमक ने कहा।

वह अभी अपनी बात पूरी न कर पाया था कि सरोवर में छोटी छोटी लहरें उठीं। फिर मान्त्रिक ऊपर आता दिखाई दिया। उसके एक हाथ में मन्त्रदण्ड था और दूसरे में सोने की तरह चमचमाता एक छोटा मगर का बच्चा था। वह किनारे की ओर तैरता आ रहा था, धूमक और उसके साथी खुशी खुशी उसकी ओर भागे।

मान्त्रिक ने मुस्कराते मुस्कराते मगर के बच्चे को दिखाकर कहा "यह बड़ा शुभ सूचक है। कहीं तुमने सोने का मगर नहीं देखा होगा। इसे और काले गरुड़ पक्षी का उपयोग करके मैं कल एक महान कार्य करने जा रहा हूँ।

धूमक और उसके साथी सोने के मगर के बच्चे को देखकर अचरज कर रहे थे। मान्त्रिक ने पहाड़ के पास होते शोर को थोड़ी देर सुना। "ओहो, तो महाकलि राक्षस के पिता की वर्षगाँठ का समय पास आ गया है। "जय शाम्भवी!" कहकर उसने हाथ ऊपर उठाये। "इन बेलों को पेड़ों के तनों पर जोर से बाँध दिया है न? महाकली और कालशम्बर के बीच भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया है।

(अभी और है)

# पातिव्रत

विक्रमार्क ने अपना हठ न छोड़ा। वह पेड़ के पास गया, पेड़ पर से शव उतारकर, हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजा, जिसने तुम्हें इतना कष्ट दिया है, उस पर तुम्हें नाराज़ होता न देख, मुझे सुन्दरवदन की कहानी याद आ रही है। ताकि तुम्हें थकान न मालूम हो, मैं उसकी कहानी सुनाता हूँ। सुनो।" उसने यूँ कहानी सुनानी शुरु की।

किसी समय कामरूप देश में ब्रह्मपुत्र नदी के तट पर, कामरूप नगर में दो मित्र रहा करते थे। एक का नाम गंगापुत्र था और दूसरे का नाम सुमित्र। गंगापुत्र बड़े घराने का था। उसके बाप

## वेताल कथाएँ

दादे या तो मन्त्री थे, नहीं तो सेनापति और उन्होंने बहुत-सा धन और सम्पत्ति कमाई थी। उस सम्पत्ति के आधार पर ही गंगापुत्र आराम से जिन्दगी बसर कर रहा था। सुमित्र उतने बड़े घराने का न था। न उसकी उतनी सम्पत्ति ही थी। उसने नगर में अपना घर वगैरह बेच बाच दिया और उस धन से एक नाव खरीद ली उसे किराये पर चलाया करता और उसी में अपनी पत्नी के साथ रहा करता। उसका गुजारा भी अच्छी तरह हो रहा था। जब कभी वह अपनी नाव नगर के घाट पर लाता तो अवश्य गंगापुत्र को देख आता।

दोनों मित्र चालीस वर्ष के हो गये थे। पर दोनों की सन्तान न थी।

एक बार सुमित्र ने गंगापुत्र से कहा— "हमारे नगर के बाहर जो सन्तान देवी का मन्दिर है, कहते हैं वहाँ मनौती करने से सन्तान होती है। मैं उसके दर्शन के लिए जा रहा हूँ। क्या तुम भी चलोगे? यद्यपि गंगापुत्र का विश्वास था कि अगर भाग्य में सन्तान लिखी है, तो होगी ही, तो भी, वह सुमित्र के साथ गया, सन्तानदेवी के मन्दिर में पूजा करवाकर, अपने मित्र को उसके नाव के पास छोड़कर अपने घर चला गया।

इसके एक साल बाद गंगापुत्र के एक सुन्दर लड़का हुआ। इसके कुछ दिन बाद, सुमित्र के एक लड़की पैदा हुई। गंगापुत्र ने अपने लड़के के नाम सुन्दरवदन रखा और सुमित्र ने अपनी लड़की का नाम यशोवती, और दोनों सोचा करते कि जब वे बड़े हो जायेंगे, तो उन दोनों का विवाह करवा देंगे।

सुन्दरवदन छः वर्ष का था कि उसका कष्ट काल शुरु हो गया। पहिले गंगापुत्र

गुज़र गया। फिर अकाल आया। गंगापुत्र की पत्नी अपनी सम्पत्ति वगैरह की देखभाल न कर सकी। अधिकारियों ने उससे ढ़ेर से कर वसूल किये और जो उसके खेतों में काश्त किया करते थे, उन्होंने उसे ठगा। वह ये सब तकलीफें न झेल सकी, उसने अपना घर, जमीन जायदाद सब बेच बाच दिया, कहीं एक छोटा-सा घर किराये पर ले लिया और उसी पैसे के सहारे जैसे तैसे दस वर्ष काट दिये। फिर सारा पैसा खतम हो गया और वे गरीब हो गये। वह बीमार पड़ गई और दवा के लिए भी पैसे न थे। वह उसी बीमारी से मर गई।

माँ के गुज़र जाने के बाद, सुन्दरवदन के सिवाय बदन के कपड़ों के कुछ न था। क्योंकि वह थोड़ा बहुत पढ़ लिख गया था, इसलिए एक व्यापारी ने उसको मुनीमगिरी का काम दे दिया। पर जब व्यापारी उसको नीची नज़र से देखने लगा, तो सुन्दरवदन यह न सह सका। वह किसी के नीचे काम नहीं कर पाता था। उसने अपनी नौकरी छोड़ दी और भीख माँगकर पेट भर लेता और किसी झोंपड़ी में सो रहता। भीख माँगने में भी वह अपना रौब बनाये रखता। भीख के लिए किसी को सताता नहीं, अगर कोई अपनी मर्ज़ी से देता, तो ले लेता, नहीं तो चुप पड़ा रहता।

सरदियों की वर्षा प्रारम्भ हो गई। बड़ी जबर्दस्त भूख लग रही थी सुन्दरवदन को। उसने न ठंड की परवाह की, न बारिश की ही और भीख माँगने घर से बाहर निकल गया। उसने चार कदम आगे रखे होंगे कि उसे सुमित्र दिखाई दिया। सुन्दर वदन उसको देखकर इस

तरह आगे बढ़ गया, जैसे उसे देखा ही न हो। पर सुमित्र ने उसकी बाँह पकड़कर रोका—"तुम सुन्दरवदन हो न? यह क्या हाल हो गया है तुम्हारा?" चूँकि गंगामित्र के गुज़र जाने के बाद, वह उनके घर की ओर न गया था, इसलिए उसे न मालूम था कि उनकी क्या हालत थी।

सुन्दरवदन ने अपनी परिस्थिति के बारे में सुमित्र को बताया।

"अरे अरे....क्या का क्या हो गया। अगर तुमने आकर मेरी नाव में काम किया, तो खाने पहिनने की कोई दिक्कत न रहेगी।" सुमित्र ने कहा। इसके लिए सुन्दरवदन खुशी से मान गया।

दोनों मिलकर नाव के पास गये। सुमित्र ने सुन्दरवदन को अपनी पत्नी को दिखाकर कहा—"इसे कुछ भोजन दो।"

"होने को भात है तो, पर वह जरा बाँसा है।" सुमित्र की पत्नी ने कहा।

"खैर, कोई बात नहीं, थोड़े से आचार के साथ परोसो।" पति ने कहा।

सुन्दरवदन बासा भात खा रहा था कि फिर बारिश शुरु हो गई।
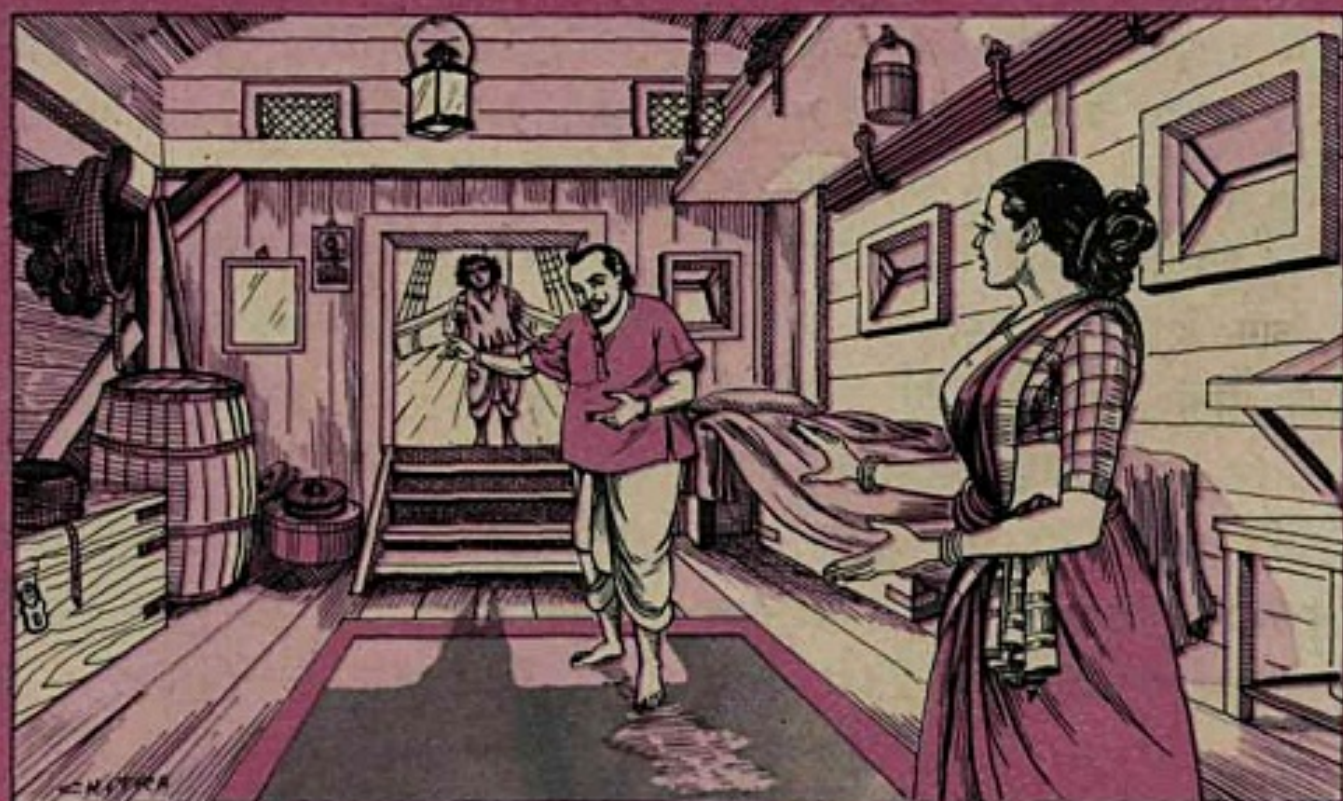
"पीछे के कमरे में एक कौपीन है, उसे जरा ला तो दो बेटी!" सुमित्र ने अपनी लड़की से कहा।

यशोवती ने वह कौपीन उठाई, पर उसे जरा फटा देखकर सूई से जल्दी जल्दी सी-सा दिया और सुन्दरवदन को लाकर दी।

. फिर सुमित्र अपने काम पर नगर में गया। व्यापारियों से बात करके शाम को नाव वापिस आया। अगले दिन जब वह उठकर नाव के ऊपरले भाग में गया, तो सुन्दरवदन नाव के पिछले भाग में यूँहि बैठा हुआ था।

"अरे....हम से कपड़ा खाना ले रहो हो न? खाली बैठने से कैसे काम चलेगा? क्यों नहीं कहीं बैठकर रस्सी बुनते हो?" सुमित्र ने कहा।

"अच्छा, बनाये देता हूँ।" सुन्दरवदन ने कहा। इसके बाद, वह कभी खाली न बैठा।

सुन्दरवदन हिसाब लिखने में बड़ा तेज़ था। नावों के और मालिक भी, उससे इस काम में मदद लिया करते और उसको आदर की दृष्टि से देखा करते। क्योंकि कष्ट खतम होते ही वह थोड़ा-सा मुटिया गया था, चेहरे पर रौनक आ गई थी।

सुमित्र और उसकी पत्नी ने एक साथ सोचा कि उनकी लड़की यशोवती के लिए उससे अच्छा दामाद नहीं मिलेगा। सुमित्र ने अपनी पत्नी से सलाह मशवरा करके कहा—"हम अपनी लड़की की तुम से शादी करना चाहते हैं। तुम्हारा क्या ख्याल है?"

"मैं यशोवती के लायक नहीं हूँ।" सुन्दरवदन ने कहा। पर जब उसने देखा कि सुमित्र का निश्चय पक्का था वह मान गया। उन दोनों का विवाह कामाख्य नगर में बड़े वैभव के साथ हुआ। पति-पत्नी बड़े मिल मिलकर रहते। अगले साल ही उनके एक लड़की हुई और वह लड़की एक साल बाद, चेचक की शिकार हो गुज़र गई।

उस लड़की के गुज़र जाने के बाद सुन्दरवदन इतना चिन्तित रहता कि उसे क्षय हो गया। वह सूखकर काँटा हो गया। वह बैठता, तो उठ भी न पाता। सुमित्र ने जहाँ तक उससे बन सका, उसके लिए दवाइयाँ मँगवाई। भूत वैद्यक करवाई। तावीज़ बँधवाये। पर कोई फायदा नहीं हुआ। एक ही साल में, वह लाश-सा हो गया। उसके ससुर-सास उसकी मौत का इन्तज़ार करने लगे। वे न चाहते थे कि उनकी लड़की इस बीमार के साथ रहे। अगर यह मर गया, तो उसकी फिर से शादी की जा सकती थी। उनमें इस प्रकार की परम्परा भी थी।

परन्तु उनकी इच्छा पूरी न हुई सुन्दरवदन मरा नहीं।

सुमित्र ने अपनी पत्नी से कहा—"सोचा था, कि बुढ़ापे में हमारे काम आयेगा पर देखो क्या हो गया? लड़की

की जवानी जा रही है। इससे जैसे भी पिंड छुड़वाकर उसकी दूसरी शादी करनी है।" उसकी पत्नी भी इस के लिए मान गई। परन्तु उन्होंने यशोवती से इस बारे में न कहा।

सुमित्र अपनी नाव को धार के विरुद्ध ले गया। एक निर्जन प्रान्त में पहुँचकर, उसने नाव किनारे लगाई। फिर उसने सुन्दरवदन से कहा—"अरे देख क्या रहे हो किनारे पर उतर कर नाव खींचो न?"

"मुझ में भला उतनी ताकत कहाँ है?" सुन्दरवदन ने कहा।

"अरे कहाँ आ मरे हमारे पास। अगर नाव नहीं खींच सकते हो तो कुल्हाड़ी और रस्सियाँ लेकर किनारे पर जाओ और लकड़ियाँ काट लाओ।" सुमित्र ने कहा।

सुन्दरवदन एक छोटी-सी कुल्हाड़ी और रस्सियाँ लेकर किनारे पर गया। वह बियाबान जगह थी। चारों ओर पहाड़ थे। कुछ दूरी पर जंगल थे। पैर घसीटता घसीटता जंगल में गया। उसमें लकड़ियाँ काटने की शक्ति भी

न थी। इसलिए उसने ज़मीन पर पड़ा ईंधन जमा किया और उनको रस्सी से बाँध लिया। उन्हें वह सिर पर न रख सका। इसलिए ईंधन के गट्ठर से एक रस्सी बाँधकर, उसे खींचता खींचता वह नदी के तट पर गया। पर वहाँ नाव न थी। वह तब तक बहुत दूर जा चुकी थी। यह देख कि उसके ससुर ने उससे पिंड छुड़ा लिया था, वह किनारे पर बैठ गया और हिचकियाँ भर भरकर रोने लगा। रोते रोते वह बेहोश-सा गिर गया।

जब उसे होश आया तो कोई मुनि-सा व्यक्ति उनके पास खड़ा था—"यह बहुत खतरनाक जगह है यहाँ न रहो।"

"मैं कहीं जा नहीं सकता। कृपा करके मेरे प्राणों की रक्षा कीजिये।" सुन्दरवदन ने उस मुनि से प्रार्थना की।

"आज रात को मेरे कुटीर में रहो। कल की बात कल देख लेंगे।" कहकर उसको पासवाले अपने कुटीर में वह ले गया। वहाँ सुन्दरवदन ने उससे जो कुछ हुआ था उसके बारे में बताया।

"सच कहा जाये तो तुम्हें मनोव्याधि है। तुम पर दवाइयों का असर न होगा। तुम्हें मैं बुद्ध के वज्रपाणी धारणी मन्त्र का उपदेश देता हूँ। अगर तुमने रोज उसका एक बार पारायण किया, तो हीन इच्छायें नष्ट हो जायेंगीं और तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक हो जायेगा और तुम्हारा बहुत लाभ होगा।"

वज्रपाणी धारणी मन्त्र को मुनि के मुख से एक बार सुनकर सुन्दरवदन को वह इस प्रकार याद हो गया, जैसे भूली हुई कोई चीज़ फिर याद आ गई हो।

रात को, मुनि के कुटीर में सोकर जब वह उठा तो न वहाँ मुनि था न कुटीर ही और वह नदी के तट पर ही था। चूँकि वह और कहीं जा नहीं सकता था इसलिए, वापिस जंगल में चला गया। पेड़ों के बीच में उसे कोई घर दिखाई दिया। भूख मिटाने के लिए वह भीख माँगने उस घर की ओर गया।

वह घर नहीं था, एक उजड़ा मन्दिर था। उसमें आठ सन्दूक थे और उनको पत्तों से ढ़का गया था। सुन्दरवदन ने सोचा कि चोरों ने उनमें अपनी चीज़ें रखी होंगी, इसलिए उनको लेने में कोई हर्ज न था।

वह फिर नदी के तट पर गया। सौभाग्यवश एक बड़ी नाव उस तरफ़ आई। उसने नाववाले को बुलाया और उससे कहा—"हमारा श्रीकंठ नगर है। मेरा नाम श्रीवत्स है। मैं और मेरे ताया पश्चिम की ओर व्यापार करने जा रहे थे कि चोरों ने हमें लूट लिया और मेरे ताया को मार दिया। मैं उनसे यह कहकर कि मै सेवक था, उनके चुँगल से छूट आया। यही नहीं, क्योंकि मैं बीमार था, इसलिए

उन्होंने मुझे मारा नहीं। चोरोंने हमारा सारा समान ले जाकर एक मन्दिर में जो जंगल में है, रख दिया। मुझे भी उसी में रख दिया। मुझ पर और हमारे सन्दूकों पर पहरा देने के लिए एक आदमी को छोड़कर वे चोरी करने चले गये। कल रात उस पहरेदार को साँप ने काटा और वह मर गया और मैं छूटकर भाग आया। मेहरबानी करके मुझे अपनी नाव में जगह दो।"

"आठ सन्दूकों में से मैं एक तुम्हें दे देता हूँ। तुम मेरे साथ आकर उन सन्दूकों को ले आओ। अगर जल्दी यह काम न किया गया, तो चोर वापिस आ सकते हैं। तब हम दोनों का नुक्सान होगा।" सुन्दरवदन ने कहा।

सन्दूकों के बारे में सुनते ही, नाववालों को जोश आ गया। वे तुरत गये और साथ आठ सन्दूक ले आये। जो सन्दूक उनके हिस्से में आया था, उसमें गहने जवाहरात भरे पड़े थे। उन्हें देख उनके आनन्द की सीमा न थी।

जब नाववालों ने सविनय पूछा—"बाबू, आप कहाँ जा रहे हैं?" तो सुन्दरवदन ने कहा—"तेज़पुर।"

वह तेज़पुर में नाव से उतरा। अपने सन्दूकों के साथ वह नगर में गया। किराये पर मकान लिया। एक लुहार की मदद से उसने उन सन्दूकों के ताले तुड़वाये। उनमें रखा खज़ाना एक तरह का न था, चोरों ने कई पीढ़ियों से उसे जमा कर रखा था। उसने उस खज़ाने को थोड़ा थोड़ा करके बेचा, ताकि किसी को किसी तरह का सन्देह न हो। फिर एक सुन्दर मकान, नगर के बाहर जमीन, बाग बगीचे खरीदे, नौकर चाकर रखे और

ऐश से रहने लगा। जल्दी ही श्रीवत्स की शोहरत सारे तेज़पुर में फैल गई। उसकी बीमारी जाती रही और वह फिर पूरी तरह तन्दुरुस्त हो गया। धनी तो वह पहिले ही हो गया था।

इधर सुमित्र की नाव सुन्दरवदन को छोड़कर, कुछ दूर गई तो यशोवती अपने कमरे में से दवा लेकर जब ऊपर आई और पति को खोजा। फिर उसने अपनी माँ से पूछा—"वे कहाँ है?"

माँ ने उसके हाथ से दवा लेकर नदी में फेंक दी। "उसका पिंड छूट गया।" उसने कहा।

जो कुछ हुआ था, उसे सुन यशोवती जोर जोर से रोने लगी और उसने नाव को पीछे मोड़ने के लिए कहा। पिता ने आकर पूछा—"उस लाश से तुम्हारा क्या काम है? समझ लो कि वह मर गया है। तुम मजे में किसी और से शादी कर लो।"

"तुम मनुष्य नहीं पिशाच हो। पहिले नाव को ले जाकर, उन्हें ले आइये। नहीं तो मुझे भी मार दीजिये।" यशोवती ने हठ किया।

सुमित्र को लाचार हो, नाव को वापिस ले जाना पड़ा। परन्तु उस निर्जन प्रदेश में सुन्दरवदन नहीं था। नदी के किनारे कुल्हाड़ी और लकड़ियों का गट्ठर था।

"हताश होकर वे नदी में कूद गये होंगे। मैं भी उसी तरह उनसे जा मिलूँगी।" कहकर यशोवती नदी में कूदने को तैयार हुई। माँ बाप ने उसको जबर्दस्ती रोका।

छः मास तक यशोवती अपने पति के लिए लगातार रोती रही। जब पिता ने उसके मृत पति के लिए पिंड दान किया,

तब उसने रोना बन्द कर दिया और वैधव्य व्रत धारण कर लिया। उसे रोता न देखकर माँ बाप ने उससे विवाह करने के लिए कहा। यह सुनते ही उसने फिर रोना शुरु किया और पानी में कूदने गई। इसके बाद उन्होंने अपनी लड़की के सामने विवाह की बात नहीं उठाई।

दो वर्ष बीत गये। सुन्दरवदन अपने नये जीवन में स्थिर हो गया। उसने अपने सास-ससुर को देखना चाहा। उसने बहुत-सा धन लिया। नौकर चाकर लिये। एक नाव किराये पर लेकर कामाख्य पहुँचा। पूछ ताछ करने पर मालूम हुआ कि सुमित्र की नाव किसी और नगर गई हुई थी। सुन्दरवदन उस नगर में पहुँचा और जब उसने घाट पर इधर उधर नजर दौड़ाई, तो उसे दूरी पर एक नाव में यशोवती विधवा के रूप में दिखाई दी।

तुरत वह अपने पड़ाव में गया। एक विवाह करानेवाले दलाल को बुलाया उससे कहा—"मैंने फलानी नाव में एक विधवा को देखा है। मैं उससे शादी करना चाहता हूँ। अगर वे शादी के लिए मान गये, तो मैं लड़की के पिता को तीन

हज़ार तोला चान्दी दूँगा और अगर यह शादी तुमने तय करा दी तो तुमको सौ तोला दूँगा।"

दलाल जल्दी ही जाकर सुमित्र से मिला। "कोई श्रीवत्स है। तेजपुर का करोड़पति। तुम्हारी लड़की को उसने देखा है। वह उससे शादी करना चाहता है। वधु की माँ को वह तीन हज़ार तोले चान्दी देने को तैयार है। बस, तुम्हारे हाँ कहने की देर है।"

"अरे भाई भला हो तुम्हारा, हमें इस तरह जीने दो। विवाह का नाम लेते ही मेरी लड़की आत्महत्या करने पर उतारु हो जाती है।" सुमित्र यह कहकर चला गया।

दलाल फिर सुन्दरवदन के पास गया—"हज़ूर, आप इस शादी के बारे में सोचना बन्द कर दीजिये। वह लड़की विधवा ही रहना चाहती है। वह फिर विवाह नहीं करना चाहती।

"खैर, जाने दो, यह पूछ देखो कि वे दो रोज के लिए अपनी नाव मुझे दे सकते हैं कि नहीं।" सुन्दरवदन ने कहा।
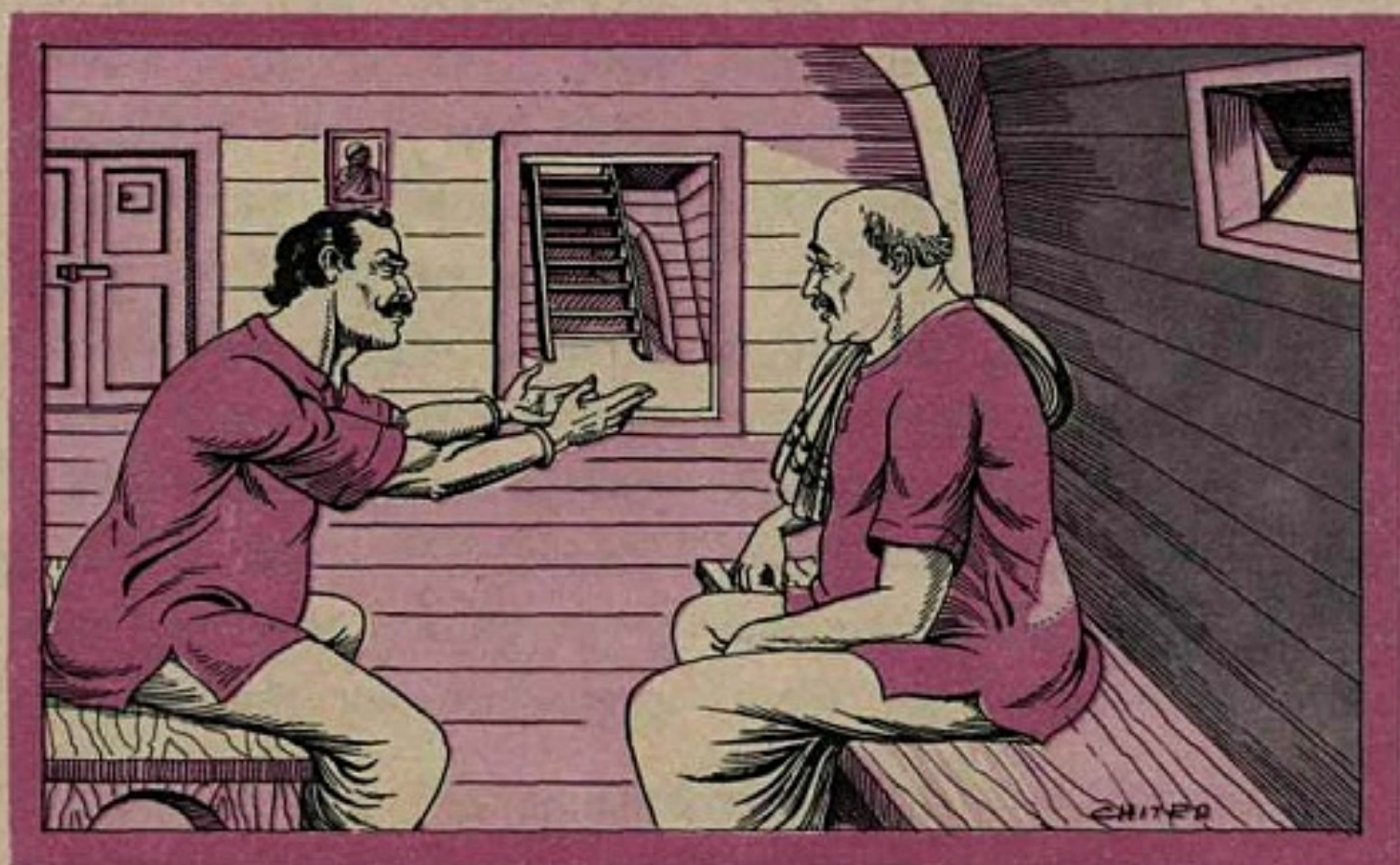
गई कि उसमें उसके पति के कुछ लक्षण थे, वह चकित हो उठी।

उस व्यक्ति ने उसके कमरे की ओर ईशारा करके कहा—"भूख लग रही है, बासा भात ही सही, मैं आचार से खा लूँगा।" ये बातें सुनकर तो उसका आश्चर्य और भी बढ़ गया।

फिर उस व्यक्ति ने अपने नौकर की ओर मुड़कर कहा—"अरे मुझ से खाना और पहिनने को लेते हो न? क्यों हाथ पर हाथ धरे बैठे हो, जाकर कम से कम रस्सी ही बुनो। अगर कोई काम नहीं है।"

फिर उसने सुमित्र की ओर मुड़कर कहा—"तुम्हारे कमरे में एक फटा कौपीन है, क्या वह मुझे दे सकेंगे?" यशोवती ने यह भी सुना। ये बातें सुमित्र ने भी सुनीं। पर उसे कुछ सूझा नहीं। उसे अचरज इस बात का ज़रूर हो रहा था कि वह करोड़पति क्यों एक फटी लंगोटी माँग रहा था। उसने कमरे में आकर पूछा—"वह फटी लंगोटी कहाँ है?"

यशोवती ने उस लंगोटी को पिता के हाथ में देते हुए कहा—"यह आदमी तुम्हारा दामाद मालूम होता है।"

"क्यों नहीं देगा! उसका पेशा ही यही है।" शादी के दलाल ने कहा। उसने फिर सुमित्र के पास जाकर कहा—"श्रीवत्स, तुम्हारी नाव को दो रोज के लिए किराये पर लेना चाहते हैं।

"ले लें।" सुमित्र ने कहा।

दलाल ने उसको सौ तोले चान्दी दे दी। सुन्दरवदन चार नौकरों के साथ, ससुर की नाव में आ गया। उसकी तड़क भड़कवाली पोशाक, हाव भाव देखकर, न सुमित्र न उसकी पत्नी ही उसे पहिचान सके। यशोवती उसको देखकर पहिचान

यह सुनकर माँ ने कहा—"छी, गन्दी कहीं की, जब हमने कहा कि हम शादी कर देंगे, तो पतिव्रता बनने लगी और अब किसी गोरे, मोटे ताज़े आदमी को देखकर अपना पति बता रही हो। वह तो कभी गंगा में जा मिला। यूँ ही बकवास न कर।"

यशोवती और क्या करती, उसने अपना मुँह बन्द कर लिया।

उस दिन रात को, जब पत्नी ने यह बात कही, तो सुमित्र ने आँखें लाल करके कहा—"क्यों, तुमने उसे डाँटा डपटा? अच्छा ही तो होगा, यदि उसका इस आदमी पर मन लग गया। इसी आदमी ने ही पहिले खबर भिजवाई थी कि वह हमारी लड़की से शादी करेगा, मैंने इसे यह सोचकर ही मना किया था कि वह शादी नहीं करेगी और अगर वह उससे शादी करना चाहती है, तो इससे अच्छी बात और कौन-सी हो सकती है। करोड़पति है। हमें सपने में भी इस तरह का दामाद नहीं मिलेगा।"

"तो कल उससे बात करके देखो। अगर बेटी मान जाये तो शादी करवा देंगे।" पत्नी ने कहा।

अगले दिन जब सुमित्र ने अपनी लड़की के बारे में शादी की बात उठाई तो सुन्दरवदन ने पूछा—"तुम्हारा दामाद किस तरह मर गया था?"

"क्या बताऊँ? वह लकड़ी लाने नदी के किनारे गया, मुझे यह याद नहीं रहा और मैं नाव चलाता गया, जब मैं वापिस गया, तो कहीं उसका पता न था। वह बड़ा बीमार भी था। तभी उसकी हालत बड़ी नाजुक थी, मर मरा गया होगा।"

"क्यों मुझ से ही झूट बोल रहे हो? तुम्हारा दामाद मरा नहीं है। मैं

ही तुम्हरा दामाद हूँ।" सुन्दरवदन ने कहा।

"जब मैंने कहा तो आप लोगों ने सुना नहीं।" यशोवती ने कमरे में से निकल्ने हुए कहा।

सुन्दरवदन ने अपनी पत्नी को गले लगाकर पूछा—"क्या हालचाल है?" दोनों खुशी में रोये।

सास ससुर में इतनी हिम्मत न थी कि दामाद के मुँह को देख सकें। परन्तु उसने अपने ससुर से नाव का काम छुड़वा दिया। उसको अपने साथ ले गया। "बुढ़ापे में, तुम्हें सुखी रखना, मेरा धर्म है।" उसने कहा। उसने उनको किसी प्रकार की कमी न होने दी।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा—"राजा क्यों सुन्दर वदन ने फिर अपने ससुर सास को साथ बुला लिया जिन्होंने उसके प्रति इतना भयंकर अपकार किया था? अगर तुमने इसका उत्तर जान बूझकर न दिया तो तुम्हारे सिर के टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे।"

इस पर विक्रमार्क ने कहा—"चूँकि ससुर और सास ने उसके साथ अपकार किया था, इसलिए ही सुन्दर वदन के कष्ट चले गये थे। जो आदमी थोड़े दिनों में क्षय से मरनेवाला था, वह बच गया। और करोड़पति बन गया। चूँकि उसके कष्ट सुखों में ससुर और सास केवल कारण मात्र थे, यह सोचकर उसने उनके बुढ़ापे में मदद की।

राजा का इस प्रकार मौन भंग होते ही, बेताल शव के साथ अदृश्य हो गया और वापिस पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

# राजा का खजाना

कभी लम्बक द्वीप का उत्तम नाम का राजा था। उसके समय में प्रजा बड़ी खुश थी। वह न्याय और धर्म का पालन करता। कहीं न कोई दुर्भिक्ष था, न अराजकता ही।

इतने समर्थ होते हुए भी उसे एक बड़ी समस्या का सामना करना पड़ा। उसका खजाना धीमे धीमे खाली होता गया। न मालूम क्या कारण था कि प्रजा का दिया हुआ कर खजाने तक ठीक ठीक न पहुँचता था। राजा को यह सन्देह न था कि प्रजा ठीक तरह कर नहीं दे रही थी। कर भी बड़े न थे। "यदि हर कोई मुट्ठी भर चावल दे दे तो मेरा खजाना भर जायेगा।" राजा कहा करता।

फसल के कटते ही हर परिवार का मुखिया अपने परिवार की संख्या के अनुसार ग्रामाधिकारी को अपने कर दे दिया करता। इस तरह वसूल किये हुए कर को ले जाकर मण्डलाधिकारी को देता और मण्डलाधिकारी जाकर अपना सामन्त को दे देते और वे राजा के पास उसे पहुँचा देते।

लम्बक राज्य बारह सामन्तों में बँटा हुआ था। एक एक सामन्त के नीचे कुछ मण्डल थे और एक एक मण्डल में कुछ ग्राम थे।

प्रजा का दिया हुआ कर कुछ ग्रामाधिकारियों के पास, कुछ मण्डलाधिकारियों के पास कुछ सामन्तों के पास रह जाता और राजा के खजाने तक न पहुँचता।

जब पैसा इतने हाथों से आ रहा था, किसके हाथों में कितना रह जाता था, निर्धारित करना आसान न था।

राजा को अपने देश के ग्रामों की ठीक संख्या और उन ग्रामों में रहनेवालों की संख्या ठीक ठीक अलग अलग मालूम हो तो कौन कितना रुपया हथिया रहा था, आसानी से जाना जा सकता था। पर बिना किसी को बताये, ये आँकड़े जमा करने थे। राजा एक सप्ताह इसके उपाय के लिए माथापची करता रहा। आखिर उसे एक उपाय सूझा।

राजा ने खबर भिजवाकर अपने राज्य के बारह सामन्त और उनके नीचे के मण्डलाधिकारियों को राजधानी बुलवाया। और बड़ा दरबार लगाया। उस दरबार में राजा ने इस प्रकार कहा।

"मैंने एक ऐसे विषय पर आप से बात करने के लिए बुलाया है, जो हमारे देश के लिए, हमारी प्रजा के लिए और हम सब के लिए अत्यन्त आवश्यक है। पिछले दिनों लम्बकेश्वर स्वामी मुझे स्वप्न में दिखाई दिये। उन्होंने कहा कि अच्छे भले हमारे देश में और आस पास के द्वीपों में बहुत-सी बाधायें, कठिनाइयाँ, आनेवाली हैं। मैंने स्वामी से प्रार्थना की कि वे बतायें कि इनको हटाने के लिए हम क्या करें। उन्होंने सलाह दी कि हम बारह तलवारें बनवाकर उन्हें स्वामी को अर्पित करें। उन्हें मन्दिर में रखें। पर इनको कैसे तैयार किया जाय? प्रति ग्राम में प्रति व्यक्ति से हम एक एक सूई लें, ग्रामाधिकारी अपने गाँव की सब सूइयाँ इकट्ठा करें और उन पर अपने गाँव का नाम लिखकर एक चिट रखें। इस प्रकार लाये हुए प्रति पोटली को मण्डलाधिकारी इकट्ठा करें और

सामन्तों को दें। इन सूइयों से वे एक एक तलवार बनवायें। फिर इसके बाद किसी गाँव में कोई बीमारी या बाधा आई तो उस सामन्त के तलवार को वहाँ भेजेंगे, तुरत बीमारी खतम हो जायेगी, बाधा हट जायेगी। अगर ऐसा न हुआ तो इसका अर्थ होगा कि उस तलवार में उतनी सूइयाँ नहीं आई हैं, जितनी कि आनी चाहिए थीं। ताकि यह गलती न हो तो देश के प्रत्येक व्यक्ति से एक एक सूई वसूली जाये, ग्रामाधिकारियों के भेजी हुई पोटलियों को बाँधकर मण्डलाधिकारी बड़ी पोटलियाँ बनायें, मण्डलाधिकारियों की भेजी हुई पोटलियों के सामन्त गठ्ठर बंधवायें, बिना किसी गलती के राजधानी भेज दें, हम उन सूइयों से तलवारें बनवाकर लम्बकेश्वर स्वामी को अर्पित करेंगे, उनकी यथाविधि पूजा करवायेंगे। यह सब मेरा भार है।" राजा ने कहा।

राजा की बात पर सामन्तों और मण्डलाधिकारियों को विश्वास हो गया। ग्रामों में सूइयाँ वसूली जाने लगीं। प्रति ग्रामाधिकारी ने, गाँव में जितने लोग थे,

उनकी संख्या के अनुसार सूइयाँ इकट्ठी कीं। उन पर अपने गाँव के नाम की चिट बांधी। मण्डलाधिकारी के पास भिजवा दीं। मण्डलाधिकारियों ने उनकी पोटलियाँ बँधवाकर सामन्तों के पास भिजवा दीं। बारह सामन्तों ने बारह गाड़ियों में उन्हें रखवाकर राजा के पास भिजवाईं।

राजा और उसके कर्मचारियों ने रात भर बैठकर ग्रामों की सूइयाँ और किस मण्डल में कितने कितने ग्राम थे और एक एक गाँव में कितने कितने लोग थे, इनकी पट्टिकायें बनवाईं। राजा को आवश्यक जानकारी मिल गई।

अच्छा दिन देखकर राजा ने अच्छे लुहारों को बुलवाया और उनसे बारह तलवारें बनवाईं। फिर उन तलवारों का नगर में जलूस निकाला गया। उनकी आरतियाँ उतारी गईं। फिर उन्हें ले जाकर लम्बकेश्वर के मन्दिर में सुरक्षित रखा गया।

इसके बाद करों की वसूली ठीक तरह होने लगी। अगर कोई कम कर लाता तो राजा कहा करता—"इनसे कम लोगोंवाले गाँवों में अधिक वसूली हुई है ! लगता है, आप ठीक तरह कर वसूल नहीं कर रहे हैं।" इसके बाद कर का धन चुरानेवालों ने वह धन चुराना छोड़ दिया। राजा का खजाना भरने लगा।

अगर कहीं किसी गाँव में किसी प्रकार की बाधा होती तो उस गाँव से सम्बन्धित तलवार भेज दी जाती, अगर बाधा हट जाती तो हट जाती, नहीं तो गाँववाले कहा करते, "सूइयों के भेजने में कोई गलती रही होगी।"
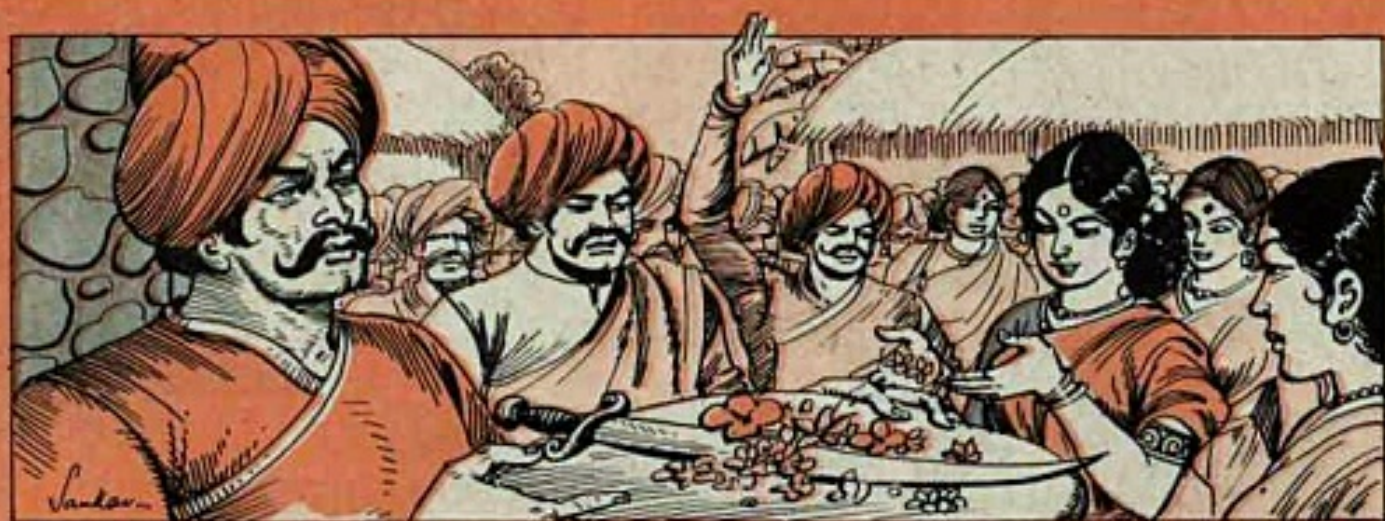
# मन्त्र विद्या

एक गाँव में मदन नाम का एक आलसी रहा करता था। वह कोई भी काम न करना चाहता और तो और उसका ख्याल था कि शारीरिक कार्य से अधिक कोई निकृष्ट कार्य न था। उसने सोचा कि यदि मन्त्र विद्या सीख ली गई, तो वह सरलता से अपनी आजीविका कर लेगा।

गाँव से कुछ दूरी पर, पहाड़ियों में एक मठ में, एक सिद्ध रहा करता था, वह बहुत-सी मन्त्र विद्यायें जानता था। मदन उसे खोजने निकला। जब वह मठ में पहुँचा, तो सिद्ध दर्भासन पर पद्मासन लगाये बैठा था। उसके शिष्य तरह तरह के कामों में लगे हुए थे।

मदन ने सिद्ध को प्रणाम करके कहा—"स्वामी मुझे भी अपने शिष्यों में शामिल कर लीजिये और मुझे मन्त्र विद्या अनुगृहीत कीजिये।"

सिद्ध ने अपना सिर एक ओर मोड़कर कहा—"बेटा, मन्त्र विद्याओं को सीखने की शक्ति तुम में नहीं है।"

यह सुन मदन बड़ा निराश हुआ। चूँकि सिद्ध ने उसे जाने के लिए नहीं कहा था, इसलिए उसका थोड़ा ढ़ाढ़स बँधा। "फिर भी मैं कोशिश करना चाहता हूँ, मुझे यहीं रहने दीजिये।"

"मुझे कोई आपत्ति नहीं है। मेरे और शिष्यों के साथ तुम भी मठ में रहो।" सिद्ध ने कहा।

अगले दिन सवेरा होते ही सिद्ध ने मदन को अपने पास बुलाया। एक

कुल्हाड़ी देकर उसे लकड़ियाँ काटकर लाने के लिए कहा।

अगर लकड़ियाँ काटी गईं, तो मन्त्र विद्या न मिलेगी। इस तरह के काम वह अपने घर पर भी नहीं करता था। फिर भी वह सिद्ध की आज्ञा के अनुसार ईन्धन काट ले आया।

सिद्ध ने रोज एक महीने तक उसे लकड़ी काटने के लिए भेजा। लकड़ी के काटने के कारण उसके हाथों पर छाले और जंगल से मठ तक चलने के कारण, पैरों पर छाले पड़ गये।

एक दिन शाम को, जब वह ईन्धन ढ़ोकर मठ में पहुँचा, तो सिद्ध के सामने दो कोई नये आदमी बैठे थे। तीनों कुछ बातें कर रहे थे। उनके कमरे में बड़ा अन्धेरा था। परन्तु सिद्ध ने अपने किसी शिष्य से प्रकाश लाने के लिए न कहा। वह स्वयं उठा और दीवार पर उसने कोयले से एक गोला खींचा। तुरत वह चन्द्र की तरह चमकने लगा। भीनी भीनी चान्दनी सारे कमरे में फैल गई।

फिर नये आदमियों में से एक ने कहा—"थोड़ी देर कोई विनोद का

कार्यक्रम रखें।" कहकर उसने एक समिधा दीवार पर खिंचे घेरे पर फेंकी। वह एक छोटी-सी अप्सरा बन गई और घेरे में से, कमरे में चलकर आई। वह फिर साधारण स्त्री के रूप में आ गई। कुछ देर तक उसने गाया और नाचा भी। आखिर वह अप्सरा समिधा बनकर नीचे गिर पड़ी।

नये आदमियों से दूसरे ने अपने हाथ के ताम्बे के लोटे को सिद्ध के शिष्य को देते हुए कहा—"इसमें जो खीर है, उसे तुम सब पेट भरकर खाओ।"

अगर उसमें खीर थी भी तो मदन ने सोचा कि उनके एक घूँट भी नहीं आयेगी। पर उसमें रखे खीर से, सब ने अपने पेट भर लिए।

फिर सिद्ध ने नये लोगों से कहा—"आओ, हम थोड़ी देर चन्द्रमण्डल में विचर आयें।"

मदन के देखते देखते तीनों दीवार पर के चन्द्रमा में जा बैठा, शिष्यों ने कुछ देर तक उनका सिर हिलाना, हाथ हिलाना भी देखा।

इतने में दीवार का चन्द्रमा यकायक बुझ गया। सारे कमरे में अन्धेरा छा
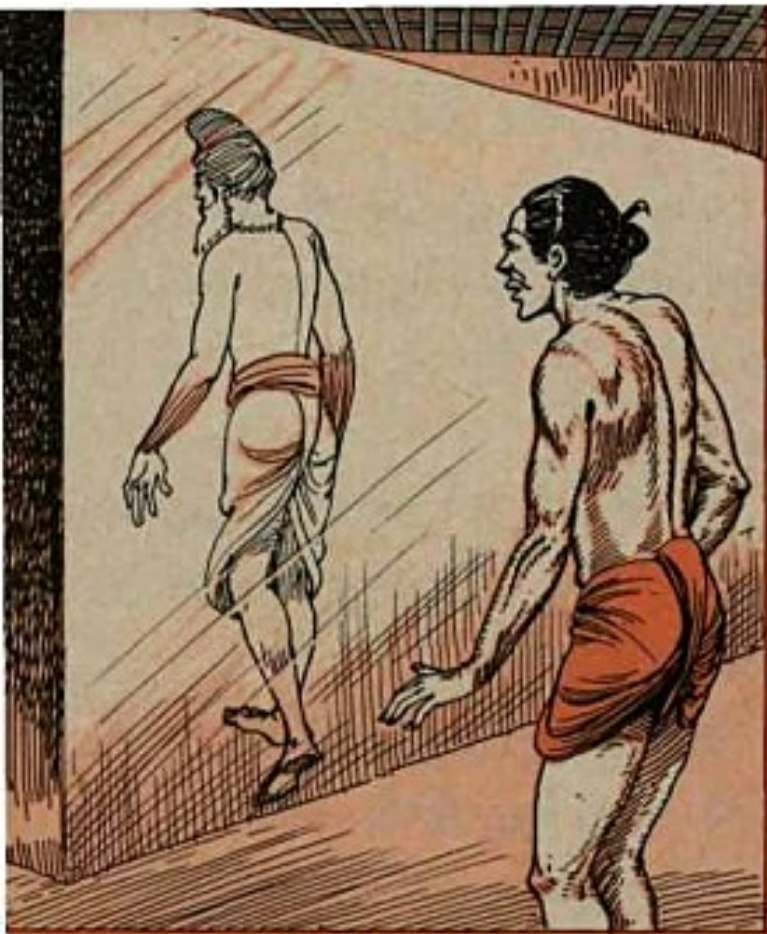
सिवाय लकड़ियों के काटने के कुछ नहीं किया है। मैंने इतनी मेहनत का काम अपने जीवन में कभी नहीं किया है। मुझे आदत भी नहीं है। अब मुझे घर याद आ रहा है।"

"तो घर जाओ, मैंने तुम्हें पहिले ही बताया था कि तुम में शक्ति काफी नहीं है। चाहो तो कल सवेरे ही चले जाओ।" सिद्ध ने कहा।

"स्वामी, मैंने इतनी मेहनत की है, क्या मुझे एक छोटा-मोटा मन्त्र भी नहीं सिखायेंगे? मदन ने पूछा।

गया। जब शिष्यों ने दिया जलाकर वहाँ रखा, तो वहाँ केवल सिद्ध मात्र ही बैठा था। उसने अपने शिष्यों से उसके बारे में कुछ भी न कहा—"तुम जाकर जल्दी सो जाओ। कल सवेरे ही उठना पड़ेगा।"

दो मास और बीत गये, मदन लकड़ियाँ काटकर लाता जा रहा था। कोई ऐसे आसार न थे, जिनसे मालूम हो कि सिद्ध उनको मन्त्र विद्या सिखाने जा रहा था।

मदन ने सिद्ध से एक बार कहा—"स्वामी, मैं तीन मास से आपकी शुश्रुषा कर रहा हूँ। इन तीन महीनों में, मैंने

"इसमें क्या आपत्ति है? तुम क्या मन्त्र सीखना चाहते हो?" सिद्ध ने पूछा।

"आपको मैंने दीवार में से चलते देखा है। अगर वह शक्ति आपने मुझे दी, तो मैं तसल्ली कर लूँगा।" मदन ने कहा।

सिद्ध हँसा। उसने मदन को एक छोटा-सा मन्त्र बताया। उस मन्त्र को पढ़ते पढ़ते वह दीवार में से स्वयं परले कमरे में चला गया और वापिस चला आया।

मदन ने सिद्ध के बताये हुए मन्त्र को पढ़कर अगले कमरे में जाने की कोशिश की, पर दीवार ने उसे जाने न दिया।

"इस तरह धीमे धीमे न चलो। सिर नीचा करके, यदि तेज़ी से भागे, तो दीवार में से निकल सकोगे।" सिद्ध ने कहा। सिद्ध के यह कहने पर, मदन अगले कमरे में जा सका। वह उस कमरे में घूम धामकर फिर सिद्ध के कमरे में आया और उसके सामने अपनी कृतज्ञता व्यक्त की।

"विद्या आ गई है, इसलिए बात बात पर ऐरे गैरे के सामने इसे न दिखाना। खबरदार।" सिद्ध ने मदन से यह कहकर उसे भेज दिया।

मदन ने घर जाते ही लोगों को बता दिया कि वह बहुत-सी शक्तियाँ सीखकर आया था, पर उसने साफ़ साफ़ किसी से भी नहीं कहा कि वह कौन-सी शक्ति सीखकर आया था। इसलिए किसी ने उसकी बात पर विश्वास न किया।

आखिर मदन ने गाँव के लोगों को सन्तुष्ट करने के लिए खुले आम अपनी सिद्धि को प्रदर्शन कराने की व्यवस्था की। गाँव के लोग सब एक जगह जमा हो गये। मदन मन्त्र पढ़ता, मेंढ़े की तरह सिर नीचे करके, सामने की दीवार की ओर भागा भागा गया, दीवार से टकराकर बेहोश गिर गया। माथा चोट के कारण सूज भी गया, गाँववाले मदन की मन्त्र शक्ति के बारे में कई वर्ष तक कह कहकर खूब हँसे।

इसलिए ही यदि कोई ऐसा काम करता है, जिसको करने की उसके पास शक्ति नहीं है, हम कहते हैं "क्यों दीवार से सिर फोड़ते हो?"

# लापता चोर

एक सुल्तान की सल्तनत में एक सज्जन के दो लड़के थे। उस सज्जन ने मरते समय उनको बुलाया—"मेरे सहारे तुम इतने दिन आराम से रहे, पर अब से तुम्हें अपनी जिन्दगी खुद बसर करनी होगी। और पेशों में हो सकता है, तुम्हें सफलता न मिले, इसलिए तुम चोरी सीख लो।" यह सलाह देकर वह मर गया।

चौर विद्या में एक वृद्ध पारंगत था। दोनों भाई उसके पास गये और उससे उन्होंने चौर विद्या का अभ्यास प्रारम्भ किया। कुछ समय गुजरा। एक दिन गुरु ने प्रत्यक्ष अपने शिष्यों को चोरी की चतुरता दिखानी चाही। इसलिए वह एक पेड़ पर चढ़ा और एक घोंसले में से सोते हुए पक्षी को उसे बिना जगाये उठा ले आया। जब गुरु ने उस पक्षी को दिखाना चाहा तो वह बड़े के हाथ में सो रहा था।

गुरु ने अपने शिष्य के हस्तलाघव की प्रशंसा की। "अब मेरे लिए तुम्हें सिखाने को कुछ बाकी नहीं रह गया है। तुम जाओ, अपना पेशा करके आराम से रहो।" उन्हें आशीर्वाद देकर उसने उन भाइयों को भेज दिया। वे अपने घर आकर चोरी कर कराकर धन लमाने लगे।

एक दिन छोटे भाई ने बड़े भाई से कहा—"ये छोटी मोटी चोरियाँ किसी काम की नहीं हैं। अगर हमने सुल्तान का खजाना लूट लिया, तो अच्छा रहेगा।"

"जरूर! हमारे पिता मरते समय कह गये थे कि धनियों को ही लूटना, गरीबों

राजेन्द्र

को मत लूटना। सुल्तान से बढ़कर भला कोन धनी होगा?" बड़े भाई ने कहा।

एक दिन अन्धेरी रात को दोनों भाइयों ने सुल्तान के महल में सेंध लगाई। दुबला छोटा भाई सेंध में से अन्दर चला गया और वहाँ से सोना, जवाहरात सिके पात्र, हीरे जड़ी तल्वारें भाई के पास पहुँचाने लगा। दोनों, जितना ढ़ो सकते थे, उतना बोरों में डालकर अपने घर चले गये।

अगले दिन चोरी पता चल गई।

अगर दो चार चीज़ें चोरी जातीं तो सुल्तान को शायद मालूम भी न होता, पर बहुत-सी चीज़ें गई थीं। इसलिए सुल्तान ने वज़ीर को बुलाकर पूछा—"वज़ीर, चोर हमारे महल में कैसे घुस सका।

"सेंध लगाई होगी।" इसमें कोई सन्देह नहीं है।" वज़ीर ने कहा।

"उसने कहाँ सेंध लगाई थी, यह हमें कैसे मालूम होगा?" सुल्तान ने पूछा।

"यह मालूम करना भी कोई बड़ी बात है! खिड़की, दरवाजे बन्द करके अन्दर धुँआ कीजिए। महल के चारों ओर सैनिकों को खड़ा कीजिए। जहाँ धुँआ बाहर आयेगा, वहीं सेंध होगी।" वज़ीर ने कहा।

वज़ीर के कहे अनुसार किया गया। चोर की सेंध का पता लग गया। बाहर खड़े हुए सैनिकों में से एक भागा भागा सुल्तान के पास गया, "हुजूर, चोर की डाली हुई सेंध के बारे में मालूम हो गया है।" उसने खुशी खुशी बताया।

"अरे सेंध किसे चाहिए, यह बताओ कि चोर कहाँ है?" सुल्तान गरजा।

"उस सेंध में इस समय चोर नहीं है हुजूर।" सैनिक ने कहा।

"वज़ीर, चोर सेंध में नहीं है, अब क्या किया जाये?" सुल्तान ने कहा।

"सेंध पर पहरा डालो। चोर जरूर आयेगा।" वजीर ने कहा।

जैसा कि वज़ीर ने सोचा था, दोनों भाई फिर आये। जो भाई सेंध में गया था, वह पकड़ा गया और बड़ा भाई बाहर से ही भाग गया।

पकड़े गये चोर को हथकड़ियाँ पहिनाकर सैनिक सुल्तान के पास ले गये।

"इसका सिर कटवा दो।" सुल्तान ने हुक्म दिया।

"जल्दी न कीजिये, हुजूर! इसमें सन्देह नहीं है कि इसका एक और साथी है। इसलिए इसे पिंजड़े में रखकर किले की दीवार से लटकवा दीजिये। ताकि लोगों को मालूम हो कि महल में चोरी करनेवालों को क्या सज़ा दी जाती है। यही नहीं, जो कोई इसे देखने आये, अगर उनमें कोई इस पर दया करे, तो उसे पकड़ लेना। वह ही इसका साथी होगा।" वज़ीर ने कहा।

छोटे भाई को पिंजड़े में रखकर किले की दीवार से लटका दिया गया। लोगों की भीड़ आती और उस पर सड़े गले फल पिंजड़े की ओर फेंकती। "सब कह रहे हैं कि कल इसका सिर काट दिया जायेगा। यह जानने के लिए कि भाई को छुड़ाने का कोई उपाय सम्भव है कि नहीं, बड़ा भाई भी वहाँ आया, और जो लोग कह रहे थे, उसने भी वह सुना।

रात को अन्धेरा होने के बाद बड़े भाई ने मुख पर नकाब डाल लिया। कन्धे पर पंख लगाकर अच्छे कपड़े पहिनकर,

एक घोड़े पर सवार होकर पिंजड़े के पास जहाँ सैनिक पहरा दे रहे थे, गया।

"तुम कौन हो?" सैनिकों ने पूछा।

"नराधमों, तुमने मुझे पहिचाना नहीं। मैं मृत्यु दूत हूँ। इज्राईल! अल्लाह ने मुझे भेजा है। यह कैदी मेरा है। मैं इसे पकड़कर ले जा रहा हूँ।" कहकर उसने पहरेदारों से पिंजड़े की चाबी ले ली। पिंजड़ा खोला। तुरत वह भाई को घोड़े पर सवार करके, हवा से बातें करने लगा। सैनिकों को डर के मारे काठ मार गया।

उस दिन रात को ही छोटा भाई वह देश छोड़कर एक और देश में जाकर रहने लगा। उस राज्य में उसके लिए जीना असम्भव हो गया था, कई हज़ार लोगों ने उसे देख जो लिया था।

परन्तु बड़ा भाई नहीं गया। उसको सिवाय मृत्यु दूत के वेष में, किसी ने कहीं नहीं देखा था। इसलिए कोई नहीं जानता था कि वह चोर था। राजमहल से चोरी लाये वस्तुओं को बेच बाचकर कुछ समय तक सुख से रहा। जवाहरात और चीज़ें वैसे की वैसी ही पड़ी रहीं। अगर उनको

बेचने का प्रयत्न करता, तो मालूम हो जाता कि वह ही चोर था। सुल्तान उसे पकड़वा देता।

सुल्तान को बड़ा दुःख हुआ कि हाथ में आया चोर भाग गया था। उसका सैनिकों की आँखों में धूल झोंककर चला जाना, उसे बड़ा बुरा लगा।

उसने अपने वजीर को बुलाकर कहा—"वजीर अब क्या दिया जाय?"

"मुझे बारह सोने की मुहरें दिलवाइये।" वजीर ने कहा।

"उनका क्या करोगे?" सुल्तान नेपूछा।
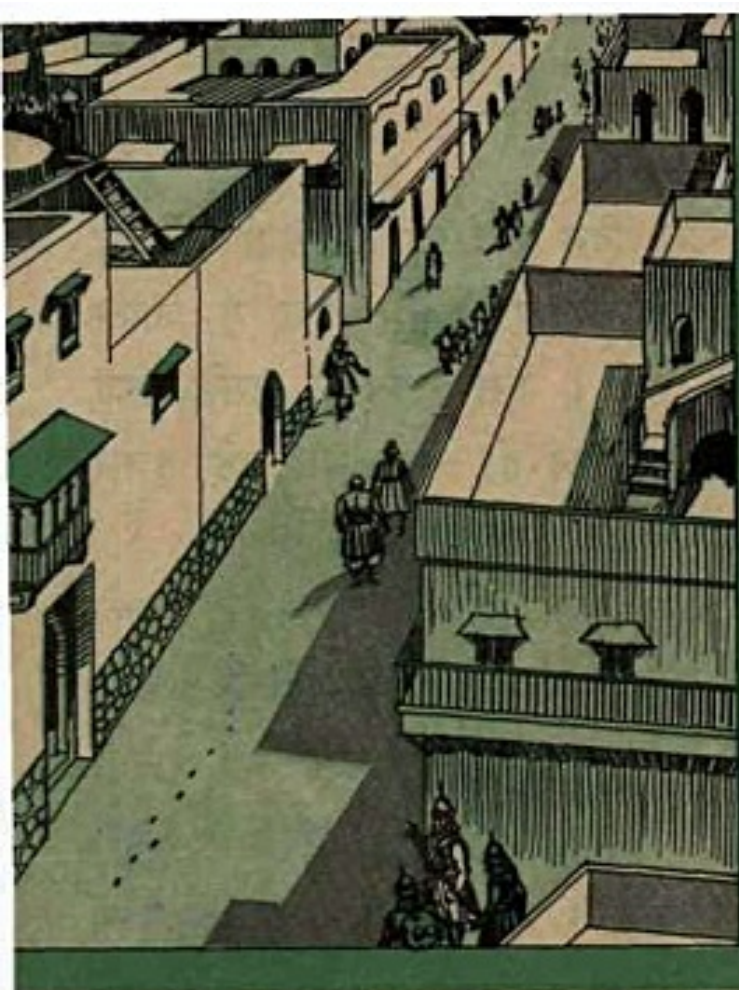
"उन्हें मैं महल के रास्ते में डलवा दूँगा।" वजीर ने कहा।

"इससे क्या होगा?" सुल्तान ने पूछा।

"पूछ रहे हैं कि क्या होगा? क्या कोई चोर उनको लेने के लिए आये बगैर रह सकेगा। अगर कोई मामूली चोर होगा, तो वह जान जायेगा कि उसे पकड़ने के लिए ही वे डाले गये हैं। इसलिए वे उनके पास नहीं जायेंगे। मगर साहसी चोर उनको नहीं छोड़ेगा। जैसे भी हो वह उन्हें चुराने का प्रयत्न करेगा। हम पास में ही सैनिकों को छुपा देंगे।" वजीर ने कहा।

सुल्तान मान गया और उसने वज़ीर को बारह मुहरें दिलवा दीं, उनको राजमार्ग पर डाल दिया गया। जगह जगह जाकर सैनिकों को तैनात कर दिया गया।

चोर ने उनको देख लिया। वह यह भी जान गया कि उनपर पहरा दिया जा रहा होगा। अगर उसने उनको वहाँ से ले न लिया तो वह चोर भी किस काम का, उसने सोचा। और उनको चुराने के लिए उसने एक चाल चली।

उसने एक व्यापारी का वेष धरा। ऊँटों को किराये पर देनेवाले के पास जाकर उसने कहा—"मैं दूर सफर से आ रहा हूँ। मेरे ऊँटों का नगर से दूर ईलाज हो रहा है। कुछ माल तुरत किले तक पहुँचाना है, तुम अपने ऊँटों को शाम तक जरा दो तो।"

भाड़ा देकर वह दस ऊँटों को किराये पर ले आया। उनके पैरों पर उसने खूब गोंद लगवाया। उसने ऊँट हाँकनेवालों का वेष बदला। उनको उस रास्ते में ले गया जहाँ सोने की मुहरें पड़ी हुई थीं, वापिस लाकर उसने उनके पैरों से गोंद उतारी। उनमें फंसी मुहरों को ले लिया। ऊँटो को ऊँटवाले को देकर घर चला गया।

"हमारी आँखों में धूल झोंककर हमारी मुहरें चोर ले गया है। अब क्या किया जाय?" सुल्तान ने पूछा।

वजीर ने कुछ सोचकर कहा—"अच्छा हो कि सब लोगों के लिए एक बड़े सहभोज की व्यवस्था की जाये।"

"और क्यों फिजूल पैसा खराब करते हो? सहभोज देने से क्या होगा?" सुल्तान ने पूछा।

"सहभोज के लिए चोर भी आयेगा, हाँ मैं कहना भूल गया। यह चोर जब पहिले चोर को छुड़ाने आया था, तो इसके मुख का नकाब कुछ हट गया था, तब पहरेदारों में से एक ने इसे देखा था। वह कह रहा है कि वह चोर को पहिचान सकता है। सहभोज जहाँ हो, वहाँ के मुख्य द्वार पर उसे रखें। चोर आयेगा और हमारा आदमी उसे पकड़ लेगा।

सहभोज की व्यवस्था की गई। वजीर का जैसा ख्याल था, चोर आया। मुख्य द्वार पर खड़े सैनिक चोर को देखते ही,

जल्दी में चिल्ला पड़ा—"चोर, चोर।" उसने उसे पकड़ने की कोशिश की। उसके हाथ में चोर की दाँयी मूँछ ही आयी। चोर ने झट मियान में से चाकू निकाला और दाँयी मूँछ काटकर अन्दर भाग गया।

जब बाकी सैनिकों ने महल के मुख्य द्वार पर आकर देखा, तो पहरेदार के हाथ में चोर की मूँछ के सिवाय कुछ न था।

"अरे, फिर चोर को तुमने भागने दिया? सुल्तान ने हताश हो पूछा—"वह कहाँ गया होगा? अन्दर बैठा खा रहा होगा। बाहर आने के लिए उसे इसी ओर से तो आना होगा। तब वह पकड़ लिया जायेगा।" सैनिकों से वजीर ने कहा—"तुम सद्भोज में जो हैं उन सब को देखो, जिसकी दाँयी मूँछ नहीं हैं, उसको पकड़ लाओ।"

थोड़ी देर में सैनिक दस आदमियों को पकड़ लाये। उनमें से किसी की भी दाँयी मूँछ न थी। चोर ने लोगों के बीच में घूमते घूमते दस आदमियों की दाँयी मूँछे काट दी थीं। अपनी दाँयी मूँछ भी काटकर सब के साथ उसने खाना खाया और मनोरंजन भी देखा।

अगले दिन सुल्तान ने वजीर को बुलवाया—"वजीर अब तुम बूढ़े हो रहे हो। आराम करो और तुरत ढ़िंढ़ोरा पिटवा दो कि जो चोर मुझे नहीं मिला है, अगर वह स्वयं मेरे पास आया तो उसका मैं अपनी लड़की से विवाह कर दूँगा और उसको वजीर मुकर्रिर कर दूँगा।"

इस प्रकार चोर सुल्तान का दामाद और वजीर बनकर आराम से रहने लगा।

विकद्र की कही हुई बातें कृष्ण ने बड़े ध्यान से सुनीं। "इसका इस समय एक ही उपाय है, मैं और भाई तुरत निकल पड़ते हैं और जरासन्ध के देखते देखते हम दक्षिण दिशा की ओर चल पड़ेंगे। तब वह मथुरा नगर पर घेरा डालना छोड़ देगा और हमारे पीछे पड़ेगा। हम विन्ध्य के दुर्गों को जीत लेंगे और जरासन्ध से युद्ध करेंगे। हमारे इस प्रकार करने से, हमारे कुल की और राष्ट्र की प्रतिष्ठा बनी रहेगी।"

इसके लिए सब मान गये। बलराम और कृष्ण निश्शस्त्र होकर मथुरा से जरासन्ध के पास गये। उन्होंने उससे पूछा—"तुम यह बताओ कि भिन्न भिन्न देशों की सेनाओं के साथ यहाँ क्यों आये हो? हम भी तुम्हारी मदद करेंगे।"

जरासन्ध ने जब कृष्ण और बलराम का आने के बारे में सुना, तो वह कवच पहिनकर धनुष, बाण लेकर वहाँ आया। उसने कहा—"मैंने सुना है कि तुम दोनों बड़े बलवान हो, तुमको युद्ध में जीतने के लिए मैं यहाँ आया हूँ। इसलिए तुम भी युद्ध के लिए तैयार होकर आओ।"

उसके यह कहते ही बलराम और कृष्ण बिल्कुल न झिझके। वहाँ से निकलकर

वे दक्षिण दिशा की ओर चल पड़े। वे इस तरह कई देश, नगर पार करके विन्ध्या के वनों के पास पहुँचे। सह्याद्रि के पास एक जंगल में बड़े बड़ के नीचे उन्होंने परशुराम को देखा।

वहां परशुराम शिव की तपस्या कर रहा था। एक तरफ़ यज्ञ की गौ, बछड़े के साथ बँधी हुई थी। उसके एक ओर कमंडल वगैरह थे और दूसरी ओर एक बड़ा धनुष-बाण, तलवार और कुल्हाड़ा थे। वह ब्राह्मण और क्षत्रिय के तेज़ से प्रकाशमान था। बलराम कृष्ण ने उसके पैरों पर अपने सिर टिकाया, प्रणाम किया। उसका स्तोत्र पढ़ा।

कृष्ण ने उसको अपनी कहानी संक्षेप में सुनाई। "महात्मा, हम यमुना नदी तक के मथुरा के रहनेवाले हैं। यादव श्रेष्ठ वसुदेव हमारे पिता हैं। मेरा नाम कृष्ण है और मेरे भाई का नाम बलराम है। कंस के भय से हमारे पिता ने हमें पैदा होते ही गोकुल भेज दिया था। हम वहीं बड़े हुए। फिर हम मथुरा आये। हमने कंस को मारा और उसके राज्य को, उसके पिता को ही सौंप दिया। कंस को मार देने के कारण जरासन्ध क्रुद्ध होकर बड़ी सेना लेकर हम पर आक्रमण करने आया है। हम चूँकि निश्शस्त्र थे, इसलिए उसके साथ हमें युद्ध करने का अवसर न मिला। उसके देखते देखते हम यहां पैदल चले आये। हमें अब क्या करना है, कृपया इस बारे में हमें सलाह दीजिये।"

परशुराम ने सब सुनकर कहा—"चूँकि तुमको उसने दक्षिण की ओर आते देख लिया है, इसलिए वह अपनी सेना के साथ तुम्हारा पीछा करता वह आ रहा होगा। जरासन्ध को जीतने के लिए

एक ही अनुकूल दुर्ग है। मैं तुम्हारे साथ आकर तुम्हें वहाँ छोड़ दूँगा।"

तीनों मिलकर निकले। वे कुछ दिन चलने के बाद गोमन्त नामक पर्वत के पास पहुँचे।

गोमन्त एक बहुत बड़ा पर्वत था। उसका एक ही एक शिखर था, वहाँ पहुँचकर सूर्य और चन्द्रमा का उदय और अस्त होने का स्थल बहुत समीप मालूम होता है और समुद्र के बहुत से द्वीप भी दिखाई देते हैं।" परशुराम ने बलराम कृष्ण को बताया।
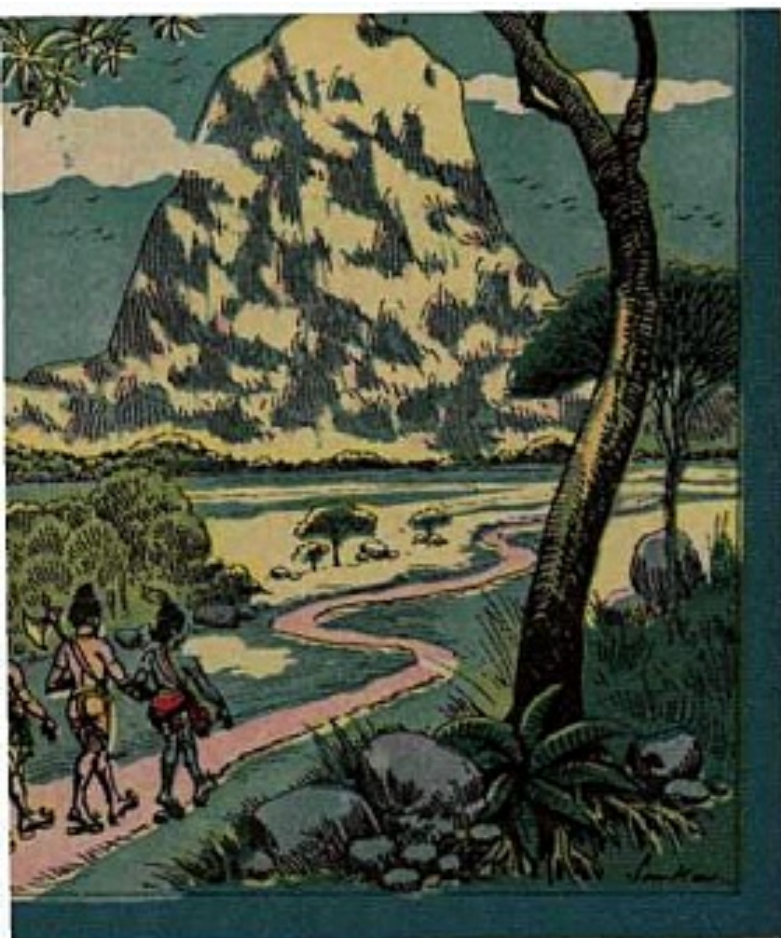
"यदि तुमने इस पर्वत पर से युद्ध किया तो जरासन्ध और उसके साथ आये हुए राजा हारकर चले जायेंगे।" उसने कहा।

तीनों बड़ी तेज़ी से पर्वत पर चढ़े।

"तुम्हारे शत्रुओं के पास आने की ध्वनि आ रही है। तुक बड़ी होशियारी से रहना, अब मैं जा रहा हूँ।" परशुराम के कहने पर बलराम और कृष्ण ने उसको सादर भेज दिया।

बलराम कृष्ण ने वहाँ के गुफाओं को और दृश्यों को देखते कुछ समय बिताया।

इतने में जरासन्ध की सेना आई और उन्होंने पहाड़ को घेर लिया। उस सेना में जरासन्ध के साथ शिशुपाल, रुक्मी, चेकितानु, बाह्लिक, द्रुपद, विराट, उत्तमौज, जयद्रथ आदि राजा थे।

जरासन्ध ने इन सब को बुलाकर एक सभा की। "यादव कुमार इस पहाड़ पर चढ़ गये हैं, ऐसा मालूम होता है। ऐसे पत्थरों को तोड़ दो, जिनके सहारे पहाड़ पर चढ़ा जा सकता है। अगर कोई ऊपर से झुककर भी देखे तो हम उन पर बाण

छोड़ें। जरूरत हो तो हम इस पर्वत का चूरा चूरा ही कर देंगे और जिस काम पर हम आये हैं, उसे करके तुरत चले जायेंगे।"

इस पर शिशुपाल ने कहा—"इस पर्वत पर तो देवता भी नहीं जा सकते हैं। रथों की सवारी करनेवाले हमारे राजा क्या इस पर पैदल जा सकेंगे? हम बहुत-से लोग हैं, इसलिए झट हमला कर देना अक्लमन्दी नहीं है। बलराम और कृष्ण को केवल बच्चा न समझो। क्योंकि दुर्ग उनके पास है, इसलिए उनपर हमला न करके उनको घेर लेना अच्छा है। उन तक खाना-पानी न पहुँचने दो। एक और काम भी किया जा सकता है। यदि हमने पहाड़ के चारों ओर आग लगा दी तो वे उसको रोक नहीं पायेंगे और फँस जायेंगे।"

शिशुपाल की यह बात जरासन्ध को जंची।

सैनिकों ने पर्वत के चारों ओर सूखी लकड़ियाँ, झाड़ियां, कूड़ा कर्कट जमा किया, उनपर आग लगा दी और उसमें लगातार ईंधन फेंकने लगे। तुरत पर्वत के चारों
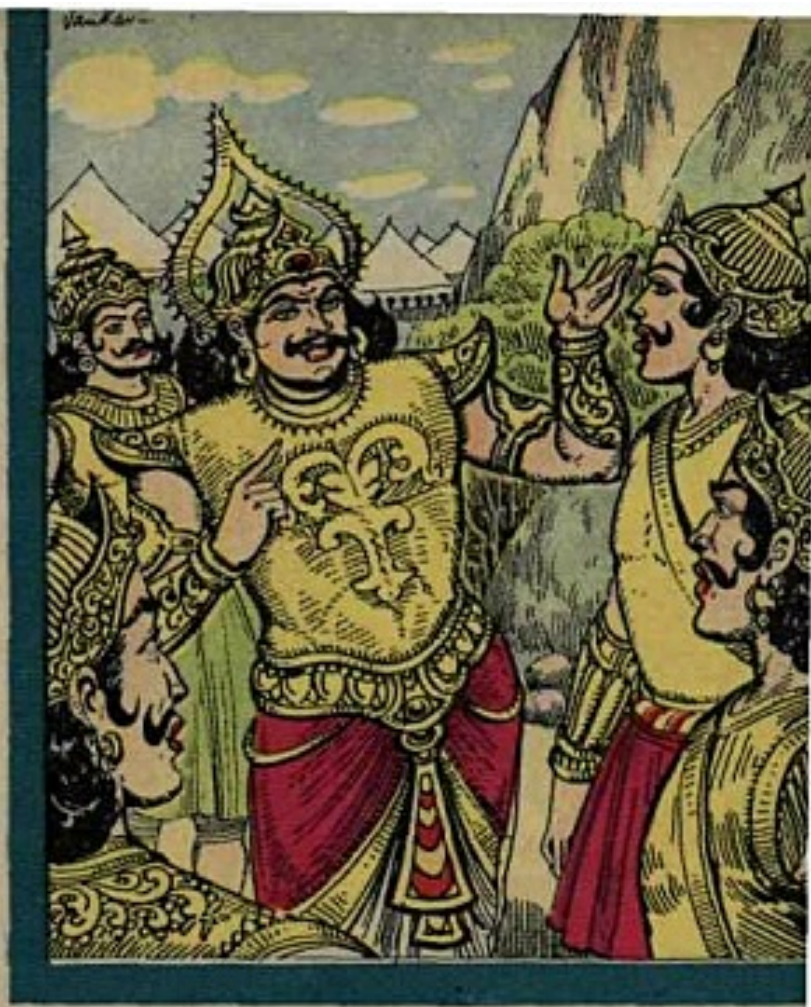
ओर से बड़ी बड़ी लपटें उठने लगीं, लपटें और धुँआ आकाश में छा गये।

यह सब देखकर बलराम ने कृष्ण से कहा—"देख रहे हो न, हमारे कारण इस पर्वत की क्या हालत हो रही है। हम यह सब बिना कुछ किये देखते रहें, तो इससे अधिक और क्या अपयश होगा? मैं इस जरासन्ध को मारे देता हूँ। क्या इतने देशों से इतनी सारी सेना के साथ कहीं युद्ध के लिए आया जाता है? मैं इस पृथ्वी पर किसी राजा को नहीं रहने दूँगा।" कहकर वह पहाड़ पर से सेना में

कूदा। कृष्ण भी उसके साथ कूदा। उनके गिरते ही जरासन्ध की सेना तितर बितर हो उठी।

उनके पैरों के दबाव से पर्वत थोड़ा-सा झुक गया और पाताल गंगा ऊपर आ गई और आग बुझ गई।

उन भाइयों के शौर्य की प्रशंसा में देवताओं ने आकाश से उनको तरह तरह के शस्त्र दिये।
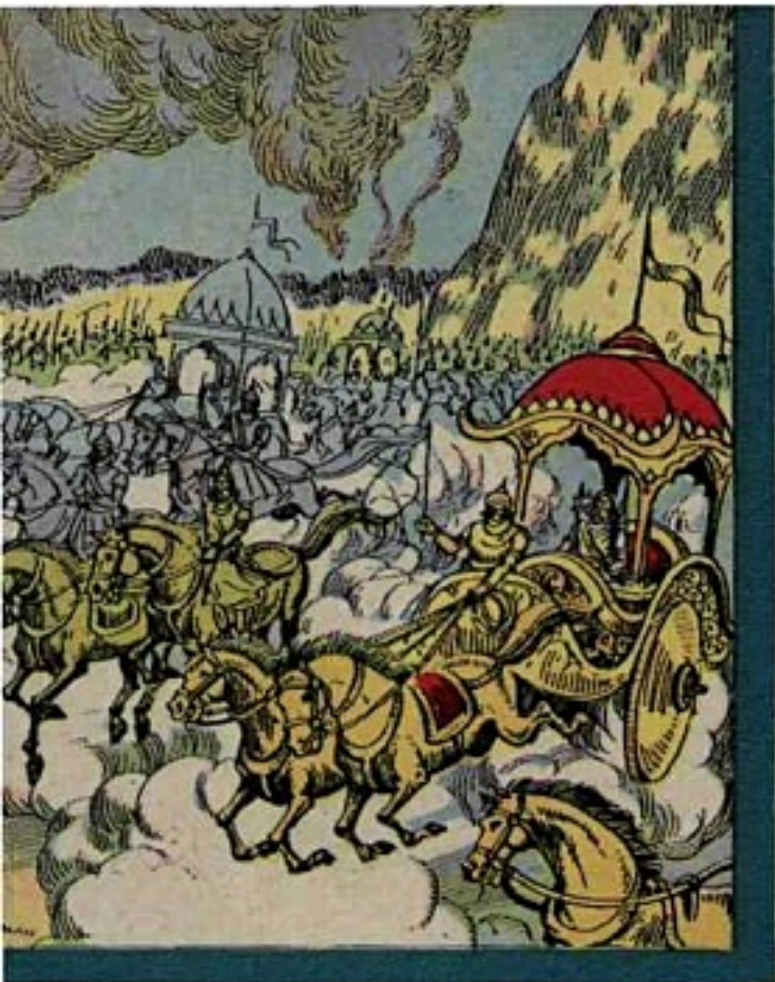
उस समय कृष्ण, विष्णु की तरह और बलराम हजारों फणोंवाले आदिशेष की तरह दिखाई दिया। जब उन्होंने सेना को इधर उधर मारना शुरु किया तो राजा भागने लगे।

उनको बुलाते हुए जरासन्ध ने कहा—"बड़ों ने कहा है कि युद्ध से जो पीठ मोड़कर भागते हैं, उनको हत्या का पाप लगता है। आप सब लोग बड़े बड़े योद्धा हैं और दो ग्वाले बच्चों से डरकर भागे जा रहे हैं। आप जरा मुझे देखो। जब तक मैं हूँ, आपको कोई डर नहीं है। मैं इन यादवों को अपने बाणों से मारे देता हूँ।"

यह सुनकर भागते हुए राजा वापिस आये। अपनी सेनाओं को उन्होंने वापिस भेजा और बलराम कृष्ण को घेर लिया। इतने सारे योद्धा उन पर तरह तरह के शस्त्रों से प्रहार कर रहे थे। पर वे अपनी जगह से न हिले। उन दोनों ने चारों ओर के सैनिकों को इस तरह मारा कि वहाँ लाशों का ढेर जमा हो गया। राजा धीमे धीमे पीछे हटने लगे। तब कृष्ण ने उनसे कहा—"सब वाहनों पर आसीन हैं। सब युद्ध में प्रवीण हैं। हम से युद्ध करके आप लोगों का भाग जाना आपको शोभा नहीं देता। आपके भरोसे यह

जरासन्ध दूर दूर खड़ा देख रहा है। उसके लिए आप क्यों मरते हो? उसे पकड़कर मैं अपना युद्ध कौशल दिखाऊँगा।"

यह सुनकर जरासन्ध जोश में आ गया। वह रथ में सवार होकर कृष्ण के पास आया। उसने कृष्ण को देखकर कहा—"मेरे होते हुए तुम क्यों इन राजाओं का अपमान करते हो? युद्ध का अर्थ जंगल में पशुओं का चराना नहीं है। सुनता हूँ कि तुम बड़े पराक्रमी हो। वह सब मुझ पर दिखाओ तभी न बात बनेगी। तुम खड़े होकर लड़ो। चुटकी भर में मैं यम के पास भेज दूँगा।"

"अगर तुम मेरा प्रताप ही जानना चाहते हो तो मैं तुम्हारे सामने हूँ न? शूरों को शेखियाँ नहीं मारनी चाहिए। तुम अपना शस्त्र चातुर्य दिखाओ।" कहकर कृष्ण ने जरासन्ध पर आठ बाण और उसके सारथी पर पाँच बाण मारे। इतने में बलराम ने जरासन्ध के धनुष को अपने बाण से तोड़ दिया। जरासन्ध की रक्षा के लिए उसके सेनापति कौशिक और चित्रसेन बलराम और कृष्ण पर आक्रमण किया। बड़े जोर शोर से युद्ध होने लगा।

युद्ध में घायल होकर कृष्ण, बलराम और जरासन्ध एक के बाद एक मूर्छित हो गये। कुछ जरासन्ध की ओर के लोग मारे गये। आखिर जरासन्ध मैदान में न टिक सका। वह और उसकी सेना भाग निकली। कृष्ण ने विजयोल्लास में पाँचजन्य बजाया।

बलराम और कृष्ण ने थोड़ी दूर तक गोमन्त पर्वत पर विश्राम करने का निश्चय किया। इतने में एक विचित्र घटना हुई।

जरासन्ध के साथ के राजा सब चले गये। परन्तु चेदि देश के राजा दमघोष,

शिशुपाल का पिता अपनी सेना के साथ गोमन्त वापिस आया। कृष्ण से मिलकर उसने कहा—"बेटा, मैं तुम्हारी फूफी का पति हूँ। मेरा नाम दमघोष है। यह यह जरासन्ध बड़ा धूर्त है। मैंने इससे कई बार कहा कि कृष्ण से युद्ध न करो, पर इसने कभी मेरी सुनी नहीं। मैं उससे डरता हूँ, नहीं तो मैं उसे कभी का छोड़ चुका होता। आज उसका पराजय देखकर मैं अपने सब लोगों के साथ तुम्हारी तरफ़ आ गया हूँ। परन्तु यह बलवान है, यह न सोचो कि इस युद्ध में ही इसका काम तमाम हो गया है। किसी और बहाने यह फिर आक्रमण करेगा। इन लाशों के बीच में यहाँ तुम क्यों पड़े हो? चलो चलें, यहाँ पास ही करवीरपुर है। उसके परिपालक वासुदेव को तुम से बड़ी ईर्ष्या है। उसका दमन अत्यन्त आवश्यक है। ये लो दो अच्छे रथ, ये दोनों तुम भाई ले लो।"

कृष्ण ने दमघोष को आदर से देखकर कहा—"सम्बन्धियों का प्रेम हो तो ऐसा हो। तुम्हारी बातें सुनकर हमें बड़ी खुशी हो रही है। तुम्हारी सहायता पाकर हम बड़े धन्य हैं। तुमने, जो युद्ध हुआ है, वह तो देख ही लिया है। हम इसी तरह कितने ही और युद्ध कर सकते हैं।"

उसी दिन बलराम और कृष्ण रथों पर सवार होकर दमघोष की सेनाओं के साथ निकल पड़े। रास्ते में उन्होंने दो जगह पड़ाव किया। तीसरे दिन वे करवीरपुर पहुँचे और वहाँ उन्होंने पड़ाव किया।

# अरण्य पुराण

[ १६ ]

मौवली जब भेड़िया माँ के पास बड़ा हो रहा था और भालू के यहाँ विद्याभ्यास कर रहा था, तभी उसका एक और दोस्त बन गया था। वह दोस्त था "काग" नाम का सर्प।

मौवली चूँकि मनुष्य का लड़का था, इसलिए उसको बहुत कुछ सीखना था। वह पहिले ही पेड़ पर चढ़ना, तैरना आदि सीख चुका था। कैसे मालूम किया जाय कि एक टहनी मजबूत है कि नहीं, जंगल में शहद के छत्ते को कैसे परखा जाये यह सब भी वह जान गया था।

पेड़ों की टहनियों पर लटके चमगादड़ों की नीन्द भंग करने पर उनको क्या कहा जाय? पानी में कूदने से पहिले पानी के साँपों को कैसे होशियार किया जाय? यह सब भी वह जान गया था।

भालू की जब शिक्षा बहुत सख्त हो जाती, तो बघेल कहा करता—"क्यों लड़के को फाल्तू सता रहे हो?

"तुम नहीं जानते यह मनुष्य का लड़का है। अरण्य के सब भेदों को इसे सीखने होंगे। अगर भेड़िये का बच्चा होता, तो बात दूसरी थी। यह मनुष्य का बच्चा, जिसकी उसे ज़रूरत है, उसे ही जानेगा।"

कभी कभी इन बातों के सीखने में मौवली लापरवाही दिखाता। तब भालू मौवली के सिर पर ठुल्ला मारता। मौवली उठकर पेड़ की टहनी पर जा बैठता

मौवली ने एक बार बड़ा अपराध किया, यह ऐसा अपराध था, जो भालू और बघेल को भी असह्य था, उसने जाकर बन्दरों से दोस्ती कर ली। वह हुआ इस तरह कि एक दिन मौवली भालू से चोट खाकर, रूठकर पेड़ पर बैठा था, कि बन्दर उसके पास उतरकर आये। उन्होंने उसके प्रति सहानुभूति दिखाई। उसे फल वगैरह खिलाये और उसे सबसे ऊँची टहनी पर ले जाकर कहा—"पूँछ नहीं है तो क्या हुआ तुम हो तो हमारे भाई। कभी न कभी तुम हमारे सरदार होकर रहोगे।"

और उठकर न आता। फिर भी भालू की शिक्षा अच्छी थी। अरण्य में कई भाषायें होती हैं। अगर मौवली वे सब भाषायें जानता था, तो इसका श्रेय भालू को ही था। सर्पों की भाषा भालू नहीं जानता था, इसलिए वह मौवली को हाथी के पास ले गया। उसने उसको साँप की भाषा सिखलाई। इस तरह वन की भाषाओं को सीखने से, मौवली को जंगल में किसी जाति से भय नहीं रह जाता।

"सिवाय अपनी जाति से।" बघेल ने मन ही मन कहा।

भालू को यह मालूम होते ही कि मौवली बन्दरों से बात कर आया था, वह बड़ा गुस्सा हुआ—"तुमने बन्दरों से बातें की हैं? इससे और अपमानजनक बात क्या हो सकती है! उनमें कोई नियम नहीं है। जो जी में आता है, खाते हैं। बन्दर में सहानुभूति और धूप में शीतलता कहीं होती है!

मौवली घबराया। उसने बघेल की ओर देखा।

"बन्दरों ने झूट बोला है, उनका कभी कोई सरदार न था, वे कभी सच नहीं कहते।" बघेल ने कहा।

"उन्होंने मुझे बड़े प्रेम से देखा। उन्होंने मुझे फिर बुलाया है। वे भी मेरी तरह पैरों पर खड़े होते हैं। ढुले नहीं मारते हैं। सारा दिन खेल खिलवाड़ में बिता देते हैं। मैं जाकर फिर उनसे खेलूँगा। मुझे छोड़ दो।" मौवली ने भालू से कहा।

"अरे मूर्ख मनुष्य के बच्चे, मैंने तुम्हें वन के सब नियम सिखाये हैं। वन के निवासियों के बारे में तुम्हें बताया— सिवाय बन्दरों के। बन्दरों में नियम आदि नहीं होते। उनकी कोई भाषा भी नहीं है, वे है दूसरों की भाषा चुराकर बोलते हैं, उनके सरदार नहीं होते। उनका रास्ता अलग है और हमारा अलग। वे जाति की याद नहीं रखते, पर ऊपर से शेखियाँ मारते हैं कि उनकी बड़ी जाति हैं और उन्होंने बड़े बड़े कार्य किये हैं। इतने में कोई फल गिरता है, तो सब हँस पड़ते हैं और यह भी भूल जाते हैं कि वे क्या कह रहे थे। हम जंगल के वासियों का उनके साथ कोई वास्ता नहीं है। जहाँ वे पानी पीते हैं, हम नहीं पीते। जहाँ वे शिकार करते हैं, हम नहीं करते। आखिर जहाँ वे मरते हैं, वहाँ हम मरते भी नहीं हैं। न उनमें सफाई है, न शर्म वर्म ही। अरण्य वासियों की दृष्टि आकर्षित करने के लिए वे इधर उधर के वेष बनाते हैं। परन्तु हम उन्हें देखते नहीं हैं। बन्दर तुम्हारे लिए निषिद्ध है, निषिद्ध।" भालू ने जोर से कहा।

"भालू जो कह रहा है, ठीक कह रहा है। परन्तु लड़के को, बन्दरों के बारे में तुम्हें पहिले बताना चाहिये था।" बघेल ने कहा।

"मुझे क्या मालूम था कि यह जाकर उन नीचों से बात करेगा।" भालू ने पूछा।

मौवली ने कहा कि जो कुछ उसने किया था, वह गलत था और वह फिर न करेगा। पर बन्दरों ने मौवली को नहीं छोड़ा।

ऊपर बताये सम्भाषण के बाद, धूप के समय में, मौवली शेर और भालू के बीच में लेटकर सो गया, जब उसकी नींद खुली, तो वह पेड़ों की टहनियों पर था, कई बन्दरों ने उसे जोर से पकड़ रखा था।

भालू जब सोकर उठा, तो वह इस तरह गरजा कि सारा जंगल गूँज उठा। चीता दान्त निकालकर पेड़ के तने पर चढ़ने लगा। बन्दर विजय ध्वनि करते और ऊपर चढ़ने लगे। वे जानते थे कि बघेल उतने ऊपर नहीं चढ़ सकता था। "बघेल ने हमें देख लिया है, बघेल ने हमें देख लिया है।" बन्दर खुशी खुशी चिल्लाने लगे। फिर वे मौवली को पकड़कर पेड़ों के ऊपर के हिस्सों पर चलने लगे।

बन्दरों के लिए पेड़ों पर रास्ते होते हैं। ऊपर जाने के रास्ते होते हैं, नीचे जाने के होते हैं। इधर उधर जाने के रास्ते होते हैं, पर उनका केवल बन्दर ही उपयोग कर सकते हैं। उन रास्तों से वे बड़ी तेज़ी से भाग सकते हैं। अब चूँकि वे मौवली को उठाकर ले जा रहे थे, इसेलिए वे आधी रफ्तार से ही चल रहे थे। परन्तु तब भी बघेल और भालू उनका पीछा नहीं कर पा रहे थे।

(अभी है)

# ७०. दक्षिणी ध्रुव के शिखर

दक्षिणी ध्रुव में कई ऊँचे ऊँचे पहाड़ हैं। उनमें सबसे अधिक ऊँचा है "विन्सन"। (१६,८६० फीट) इस पर तो अमेरिकी आसानी से चढ़ गये। पर इससे ५७० फीट कम "टीरी" (जो चित्र में है) पर चढ़ने के लिए उनको बड़ी कठिनाई हुई। एक सप्ताह के निरन्तर परिश्रम के बाद, ६ जनवरी १९६७ में वे उसके शिखर तक पहुँच सके।